ISSN 2349-6614

मई 2024

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

अबकी बार, किसकी सरकार
कौन पार, कौन मझधार

TO RISE ABOVE
STEP BY STEP
HIGH SCHOOL
CBSE Affiliation No. : 1730602

STEP BY STEP HIGH SCHOOL

A Coeducational English Medium School

CLASSES PLAY GROUP TO 12TH

"A School where Learning is Fun"

ADMISSION OPEN FOR 2024-25

PLAY GROUP TO HKG

- SECTOR 11, UDAIPUR-313002

Phone : 0294-2483932, 2481567
Mobile : 73570 12026
Email : contact@stepbystephighschool.org

PLAY GROUP TO 12th

- JOGI KA TALAB, SECTOR 14, UDAIPUR-313002

Phone : 9680520421
Phone : 0294-2941421
Website : stepbystephighschool.org

मई 2024 वर्ष 22 अंक 01

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

विपणन प्रबंधक नितेश कुमार, नंदकिशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी
कुलदीप इंदौरा, कृष्णकुमार हरितवाल
धीरज गुर्जर, अभय जैन
लालसिंह झाला, ओम शर्मा
अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमंत भागवानी, डॉ. राव कल्याणसिंह
अशोक तम्बोली, सुंदरदेवी सालवी

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

अंदर के पृष्ठों पर...

नासूर

नक्सलियों पर नकेल की पूरी तैयारी
पेज 08

कुपोषण

कम हो रही बच्चों की लम्बाई और वजन
पेज 12

स्वास्थ्य
दूर रहेगी गर्मी की बीमारियां
पेज 20

मंथन
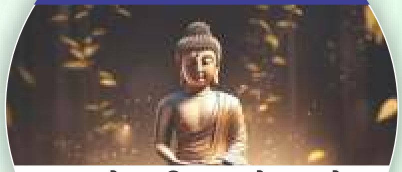
अहं के अस्तित्व को बुद्ध ने कभी स्वीकार नहीं किया
पेज 30

रसराज
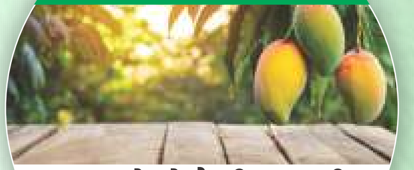
आम में तो है ही, उसकी कहानी में भी बड़ा रस
पेज 32

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

HONDA
Shine
का वही भरोसा
अब 100cc में
दमदार माइलेज | शानदार स्टाइल
मजेदार कम्फर्ट | किफायती दाम
BOOK ONLINE NOW!
CLICK
BOOK
RELAX
₹62900/-
एक्स - शोरूम कीमत
Lakecity Honda
Commerce House, Town Hall Road, Udaipur (Raj.) M.: 9776977674

राजस्थान: किस करवट बैठेगा ऊंट ?

राजस्थान में लोकसभा की सभी 25 सीटों पर दो चरणों में क्रमश: 19 व 26 अप्रेल को मतदान हो चुका है। मतदाताओं का रूझान भारतीय जनता पार्टी की ओर दिखाई दिया, किन्तु उसके पक्ष में अथवा कांग्रेस के विरोध में कोई लहर थी, ऐसा नहीं कहा जा सकता। मतदान भी पूर्वापेक्षा कम रहा है। इसलिए ये चुनाव दिलचस्प तो हैं, लेकिन विजयमाल किसे वरण करेगी, इस संबंध में कोई टिप्पणी किए बगैर 4 जून की तारीख का इन्तजार करना ही ठीक होगा। सन् 1980 से लेकर 2019 तक राज्य में हुए ग्यारह लोकसभा चुनावों में जब-जब भी बिना लहर वाले चुनाव हुए तब-तब भाजपा-कांग्रेस के बीच सीटें करीब आधी-आधी बंटती रही हैं। दूसरी बात यह भी कि लहर विहीन चुनाव में जिस पार्टी के पक्ष में मतदाताओं का रूझान अथवा माहौल अधिक दिखाई देता है, वह 70-80 प्रतिशत सीटों पर जीत पक्की कर लेता है। राज्य में 1991 और 1996 के चुनाव किसी भी व्यक्ति अथवा पार्टी की लहर पर सवार नहीं थे। सन् 1991 में कांग्रेस को 13 और भाजपा को 12 सीटें मिली थीं। उसके बाद 1996 के चुनाव में दोनों दलों को 25 में से 12-12 सीटें मिली। एक सीट पर निर्दलीय ने कब्जा जमाया। वर्ष 1999 के चुनाव में कारगिल युद्ध को लेकर अटल सरकार के पक्ष में माहौल बना और 16 सीटों पर भाजपा ने जीत दर्ज की। शेष 9 सीटें कांग्रेस के खाते में गई । सन् 2009 के चुनाव की बात करें तो सरदार मनमोहन सिंह की तत्कालीन सरकार की आर्थिक मोर्चे पर उपलब्धियों ने कांग्रेस की झोली में 20 सीटें डाल दीं। यह भी बिना लहर का चुनाव था। इस बार भी कोई लहर न इधर और न उधर दिखाई दी। इसलिए 2014 और 2019 के मुकाबले ये चुनाव दिलचस्प और चौंकाने वाले हो सकते हैं। उक्त दोनों चुनावों में भाजपा ने सभी 25 सीटों पर जीत दर्ज की और इस बार हैट्रिक का उसका दावा है। लेकिन वह इस बात से भी वाकिफ है कि पिछले वर्ष राज्य में हुए विधानसभा चुनाव में उसने 6 लोकसभा सांसदों को चुनाव मैदान में उतारा था, जिनमें से तीन ही जीत पाए थे। इससे स्पष्ट हुआ कि उसके सांसदों के खिलाफ सत्ता विरोधी रूझान तो है ही, अतएव इस बार लोकसभा के रण में भी 25 में से 11 नए चेहरे उतारने पड़े। भाजपा के पुराने और जमीनी कार्यकर्त्ताओं में इस बात को लेकर भी रोष देखा गया कि पार्टी ने कांग्रेस और अन्य दलों से आए लोगों को थोक में प्रवेश ही नहीं दिया कुछ को उम्मीदवार बनाकर चुनाव चिह्न भी पकड़ा दिया। हालांकि कांग्रेस भी इससे अछूती नहीं रही। यह पहली बार हुआ है कि राहुल कस्वां ने अपनी उपेक्षा पर भाजपा को छोड़ा और वे चुरू से भाजपा प्रत्याशी देवेन्द्र झाझड़िया के लिए कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में चुनौती बने। इसी तरह डूंगरपुर-बांसवाड़ा सीट पर कांग्रेस की विधायकी छोड़कर आए महेन्द्रजीत सिंह मालवीय के गले में भाजपा का कमल पट्टा डालते ही उन्हें टिकट थमा दिया गया। इन सीटों के परिणाम पर पूरे प्रदेश की नजर है। यही स्थिति कोटा में है, गुर्जर नेता प्रहलाद गुंजल ने लोकसभा स्पीकर और भाजपा नेता ओम बिरला की सीधी जीत के रास्ते में प्रश्न चिह्न लगा दिया है। भाजपा के पूर्व विधायक गुंजल यहां कांग्रेस के प्रत्याशी हैं। जहां तक कांग्रेस पार्टी की बात है, तो 2014 के बाद पहली बार इसे तीन सीटों नागौर, बांसवाड़ा और सीकर में गठबंधन करना पड़ा है। बांसवाड़ा में पहले तो कांग्रेस ने अपना प्रत्याशी घोषित कर उसे चुनाव चिन्ह दे दिया। लेकिन नाम वापसी के दिन उसने बीएपी से गठबंधन की घोषणा कर दी। जब कि उसके प्रत्याशी ने नाम वापस लिया ही नहीं। इस तरह गठबंधन के बावजूद 'हाथ' के चुनाव चिह्न पर प्रत्याशी मैदान में कायम रहा।

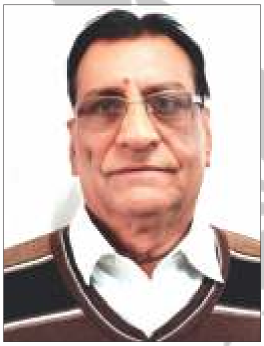

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी व महासचिव प्रियंका गांधी ने राजस्थान के दौरे कर बेरोजगारी, महंगाई और सरकारी जांच एजेंसियों के भय से उत्पन्न माहौल को जोर-शोर से उठाते हुए न्याय पत्र की गारंटी का प्रचार किया। वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व विदेश मंत्री जयशंकर सहित बड़े स्टार प्रचारकों ने धुंआधार प्रचार कर 10 साल की उपलब्धियों और आने वाले सालों में दी जाने वाली विकास की गारंटियों की चर्चा की। इस चुनाव में सबसे रोचक मुकाबला बाड़मेर-जैसलमेर की लोकसभा सीट पर भी रहा जहां 26 साल के युवा निर्दलीय विधायक रविन्द्र सिंह भाटी ने इस चुनाव में भी निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में ताल ठोकी, देखना यह है कि वे जीतते हैं या किसी और की जीत का आधार बनते हैं।

हिंदीपट्टी पर लिखी जाएगी जनादेश की पटकथा

विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत में चुनावी महासमर के सात में से दो चरणों (19 अप्रेल व 26 अप्रेल) में लोकसभा की कुल 543 में से 190 सीटों के चुनाव सम्पन्न हो चुके हैं। बैतुल (मप्र) से बसपा उम्मीदवार अशोक भलावी की 9 अप्रेल को हार्ट अटैक से मौत होने से चुनाव स्थगित कर दिया गया है, जो तीसरे चरण में 7 मई को होगा। मई में 07,13,20 और 25 तारीख को विभिन्न राज्यों की 297, सीटों के लिए चुनाव होंगे। शेष 57 सीटों के चुनाव सातवें और अन्तिम चरण में 1 जून को होंगे। चार जून को मतगणना के बाद परिणाम घोषित किए जाएंगे।

अमित शर्मा

राजस्थान की सभी 25 सीटों सहित 190 लोकसभा सीटों के लिए मतदान प्रारंभिक दो चरणों में पूर्ण हो चुका है। एनडीए ने जहां नरेन्द्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री के रूप में पेश किया है, वहीं विपक्ष का इंडी गठबंधन चेहरा विहीन है। हालांकि सबका फोकस युवा, महिला, किसान और गरीब के मुद्दों पर है। बाजी जीतने के लिए वादे, दावों और आरोपों के हथियार तो चुनावों में चलते ही रहे हैं। पर इस बार भरोसे और गारंटी के एक के बाद एक कंटेनर भी खोले जा रहे हैं। जिनमें सबसे अधिक चर्चा मोदी की गारंटी और कांग्रेस की न्याय गारंटी की है। एनडीए 2047 तक देश को विकसित राष्ट्र, भारत को दुनिया की तीसरी अर्थ व्यवस्था बनाने, महिलाओं व वंचितों के सशक्तीकरण, किसानों के कल्याण, युवाओं के सर्वांगीण विकास की गारंटी दे रहा है साथ ही पिछले दस वर्षों के शासन की उपलब्धियों राम मंदिर निर्माण, अनुच्छेद 370 का खात्मा, सड़कों के विस्तार व सीमावर्ती क्षेत्रों के विकास तथा नदियों को आपस में जोड़ने की शुरूआत से विपक्ष को घेर रहा है। न्याय की गारंटी से तेलंगाना, हिमाचल प्रदेश और कर्नाटक में जीती कांग्रेस इसे अपने गठबंधन के साथ राष्ट्रीय स्तर पर भुनाने के लिए आक्रामक है। वह बेरोजगारी और मूल्यवृद्धि का मुद्दा भी जोर शोर से उठा रही है। विपक्ष के इंडी

हिंदी पट्टी राज्यों की सीटें

हिंदी पट्टी में यूपी (80), बिहार (40), मध्यप्रदेश (29), झारखंड (14), राजस्थान (25), हरियाणा (10), दिल्ली (7), उत्तराखंड (5), हिमाचल (4), और छत्तीसगढ़ (11) सीटें शामिल हैं।

राजग के मुद्दे

भाजपा खासकर कांग्रेस और इंडिया ब्लॉक नेताओं की हिंदी और हिंदीविरोधी टिप्पणी को मुद्दा बना रहा है। भाजपा ने इस क्षेत्र में हिंदुत्व और सामाजिक न्याय के बीच संतुलन बनाने के साथ सोशल इंजीनियरिंग के तहत कई क्षेत्रीय दलों को साधा है।

विपक्ष के मुद्दे

कांग्रेस की अगुवाई वाले इंडी अलाएंस ने हिंदीपट्टी में सामाजिक न्याय को अहम मुद्दा बनाया है। इसके तहत केंद्रीय स्तर पर जातिगत जनगणना, जनादेश मिलने के बाद जाति की संख्या के आधार पर आरक्षण देने का वादा किया है। महंगाई और बेरोजगारी के सवाल को भी उठाया जा रहा है।

अलायंस सहित तृणमूल कांग्रेस और वामदल एनडीए पर लोकतंत्र के खात्मे, केन्द्रीय जांच एजेन्सियों के दुरूपयोग, गिनी चुनी कम्पनियों को लाभ पहुंचाने और जो उसके दबाव को स्वीकार नहीं कर रही, उनके खात्मे का आरोप भी लगा रहे हैं। इस चुनाव में सबकी निगाहें एक बार फिर हिंदीपट्टी के राज्यों पर हैं। लोकसभा में 225 सांसद भेजने वाले यह दस राज्य आजादी के बाद से अब तक दलों-गठबंधनों के लिए दिल्ली का रास्ता तैयार करते रहे हैं। बीते चुनाव में इन्हीं राज्यों में दमदार प्रदर्शन से भाजपा लगातार दूसरी बार सत्ता हासिल करने की हसरत पूरी कर सकी। जब कि इन्हीं राज्यों के मतदाताओं ने कांग्रेस के लिए सत्ता का सूखा खत्म करना तो दूर उसे प्रतिष्ठा बचाने लायक भी नहीं छोड़ा। इन राज्यों के मतदाताओं में हिंदुत्व, राष्ट्रवाद, सनातन और सामाजिक न्याय के प्रति गहरा आकर्षण रहा है। बीते चुनाव में इन चारों ही मोर्चे पर भाजपा बेहतर बूथ प्रबंधन और बेहतर रणनीति की बदौलत अपने विरोधियों पर भारी पड़ी। कांग्रेस ने जहां इन राज्यों में अपने दम पर महज 5 सीटें हासिल की वहीं भाजपा ने 177 तो सहयोगियों के साथ 203 सीटें जीत कर विपक्ष की कमर इस तरह तोड़ी की आज 5 वर्ष बाद भी वह इन राज्यों में ठीक से खड़ी नहीं हो पाई है।

बिहार में आजमाइश: राज्य में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) और विपक्षी

महागठबंधन इन्डी आमने सामने है। दोनों ही गठबंधनों में सहयोगी दलों की भरमार है। चुनाव से ठीक पहले जदयू को साथ कर भाजपा ने विपक्ष को करारा झटका दिया है। राजद की अगुवाई में विपक्ष सामाजिक न्याय के सहारे राजग को घेरने की कोशिश में जुटी है। यहां राजग के साथ नीतीश, मांझी, कुशवाहा और लोजपा चिराग हैं।

चुनौती भाजपा के सामने भी कम नहीं : बीते चुनाव में हिंदीपट्टी ने ही भाजपा की लगातार दूसरी बार धमाकेदार जीत को सुनिश्चित किया था। पार्टी ने तब सहयोगियों के सहारे 5 राज्यों राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल, उत्तराखंड और हरियाणा में क्लीन स्वीप किया था। गठबंधन को बिहार की 40 में से 39, झारखंड की 14 में से 12 और अपने दम पर मध्यप्रदेश की 29 में 28, छत्तीसगढ़ की 11 में 9 और यूपी की 80 में से 64 सीटें हाथ लगी थी। जाहिर तौर पर अगर भाजपा ने पुराना प्रदर्शन नहीं दोहराया तो उसका 400 पार का नारा परवान चढ़ना तो दूर सत्ता बचाने के लिए संघर्ष करना होगा।

कांग्रेस को आत्म मंथन की ज़रूरत: कांग्रेस अगर बीते दो चुनावों में नेता प्रतिपक्ष का पद हासिल करने में भी नाकाम रही तो इसका कारण हिंदीपट्टी में उसका निराशाजनक प्रदर्शन था। अब भी समय है कि आत्म मंथन करे और भूलों व चूकों पर मिट्टी डाले। पार्टी इन राज्यों में से 6 में तो खाता तक नहीं खोल पाई। उसे 80 सीट वाले यूपी, 40 सीट वाले बिहार, 29 सीट वाले मध्यप्रदेश में महज एक-एक और छत्तीसगढ़ में दो सीटें हासिल हुई थी। तब कांग्रेस की अगुवाई वाला यूपीए भी महज छह सीट जीत पाया। जाहिर तौर पर हिंदी पट्टी में कांग्रेस को मतदाताओं से सहानुभूति हासिल करने की जरूरत है। इसमें नाकाम रहने पर उसका सत्ता का सूखा खत्म करने का सपना पूरा होना मुश्किल ही दिखाई पड़ता है। मेरा ऐसा मानना है कि यदि उदयपुर चिंतन शिविर के निष्कर्षों पर समय रहते अमल किया जाता तो कांग्रेस आज बेहतर स्थिति में होती।

बसपा के साथ कांग्रेस-सपा गठबंधन पर नजर

- हिंदीपट्टी के केंद्र में उत्तर प्रदेश है, जहां इस बार नए समीकरण बने हैं। बसपा अकेले मैदान में है।
- रालोद ने सपा का साथ छोड़ दिया है। भाजपा अपना दल, रालोद, सुभासपा और निषाद पार्टी के साथ मैदान में है।
- बसपा, सपा दोनों के लिए यह चुनाव करो या मरो का सवाल है। भाजपा के सहयोगियों ने अगर बेहतर प्रदर्शन में मदद नहीं की तो इनकी प्रासंगिकता भी घटेगी।

ओमप्रकाश अग्रवाल
डायरेक्टर
73574–16441

अनुज गर्ग
डायरेक्टर
97820–62721

Group

ओम रियल स्टेट

209, राधे प्लाजा, हिरण मगरी, सेक्टर–4, उदयपुर (राज.)
मो. 7357416441, 9782062721

OM REAL ESTATE

209, Radhey Plaza, Hiran Magri, Sector-4, Udaipur (Raj.)
Ph.: 7357416441, 9782062721

नक्सलियों पर नकेल की पूरी तैयारी

छत्तीसगढ़ के कांकेर में सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ में उनतीस नक्सलियों को मार गिराया। निस्संदेह यह बड़ी कामयाबी है। इस वर्ष इस घटना सहित अब तक करीब अस्सी नक्सली मारे जा चुके हैं। सरकार का कहना है कि छत्तीसगढ़ में नक्सली कुछ इलाकों तक सिमट कर रह गए हैं। जल्दी ही उन पर पूरी तरह नकेल कसी जा सकेगी। केंद्र और राज्य सरकारें ऐसे दावे बहुत समय से करती आ रही हैं, मगर हकीकत यह है कि अनेक उपायों, रणनीतियों और प्रयासों के बावजूद वहां माओवादी हिंसा पर काबू पाना कठिन बना हुआ है। थोड़े-थोड़े समय पर नक्सली सक्रिय हो उठते और घात लगा कर सुरक्षाबलों पर हमला कर देते हैं। अगर सचमुच नक्सलियों को कुछ इलाकों तक समेट दिया गया होता और उनके संगठन कमजोर हो गए होते, तो उनके पास अत्याधुनिक हथियारों की पहुंच संभव न होती, सुरक्षाबलों की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए उनके पास कारगर संचार प्रणाली न होती। छत्तीसगढ़ में करीब चालीस वर्ष से माओवादी हिंसा का दौर चल रहा है। इस बीच अनेक रणनीतियां अपनाई गई, मगर वे कारगर नहीं हो पाई हैं। चुनाव के माहौल में सुरक्षाबलों की ताजा कामयाबी से नक्सली उपद्रवियों का मनोबल जरूर कमजोर होगा, पर इस समस्या को जड़ से समाप्त करने के लिए व्यावहारिक कदम की अपेक्षा अब भी बनी हुई है।

दरअसल, आदिवासी इलाकों में माओवादी हिंसा की कई परतें हैं। आदिवासियों को लगता है कि सरकार उनके जंगल और जमीन छीन कर उद्योगपतियों को सौप देना चाहती है। वे इसका विरोध करते हैं। शुरू में इस मसले को बातचीत के जरिए सुलझाने की कोशिश की गई, मगर वह किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सकी। फिर बंदूक के जरिए उन पर काबू पाने का प्रयास किया जाने लगा। फिर आदिवासियों और समर्पण करने वाले नक्सलियों को ही बंदूक देकर नक्सली संगठनों के खिलाफ खड़ा करने की रणनीति अपनाई गई। उसमें काफी खून-खराबा हुआ, मगर नक्सली समस्या को समाप्त कर पाना संभव न हो सका। हेलीकाप्टर, ड्रोन और अत्याधुनिक संचार तकनीकी के जरिए उनकी गतिविधियों पर नजर रखी जाने लगी, पर उसमें भी बहुत कामयाबी नहीं मिल सकी। नक्सली कई मौके पर सुरक्षाबलों को अपने जाल में फंसा कर हमला करते भी देखे जा चुके हैं। दो साल पहले इसी तरह उन्होंने बीजापुर में बाईस सुरक्षाबालों को मार गिराया था। नक्सली समस्या से पार पाने के लिए दो तरह के विचार काम करते रहे हैं, जिसमें आदिवासियों को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए उनके इलाकों में विकास कार्यक्रमों पर बल देने की सिफारिश की जाती रही है। इसके तहत पिछली सरकार ने कई योजनाएं भी चलाई थी, ताकि उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो सके। दूसरा विचार बंदूक के बल पर नक्सलियों के सफाए का रहा है। मगर हकीकत यह है कि उनसे निपटने के लिए कोई व्यावहारिक नीति आज तक नहीं बन सकी है। हजारों निरपराध आदिवासी जेलों में बंद हैं, उनकी रिहाई के बारे में कोई कदम नहीं उठाया जा सका है। पांच-छह साल पहले एक नीति बनाने पर ज्यादा जोर दिया गया था, जिसमें उनसे बातचीत का प्रस्ताव भी था, मगर वह नीति बन नहीं सकी। सबसे जरूरी है, स्थानीय आदिवासियों में यह भरोसा पैदा करना कि सरकार उनके जीवन में बेहतरी के लिए प्रतिबद्ध है। उनके जल, जंगल, जमीन के मसले पर संजीदगी से बात हो, तो शायद वे हिंसा का रास्ता छोड़ने को तैयार हो जाएं।

– सनत जोशी

Sidharth Chatur
CMD
98290-41166

Shreyas Chatur
Director
98299-60010

COMFORT
TRAVELS & TOURS

One Stop Shop For:

- Air Tickets
- Holiday Packages
- Hotel Bookings
- Visa Services
- Car Rentals
- Royal Weddings
- Conferences
- Meetings

IATA

TAFI
TRAVEL AGENTS FEDERATION OF INDIA

TAAI

UFTAA

Head Office
104, " AKRUTI", 4-New Fatehpura, Opp. Saheliyon Ki Badi, Udaipur 313 004
Tel.: +91-294-2411661-62-63, +91-9829594662 Fax: +91-294-2422131
E-mail: dtkt@comforttours.com packages.udaipur@comforttours.com

Palace Office
Tel.: +91-294-2421771, +91-9859794669
E-mail: operations@comforttours.com

Airport
Tel.: +91-294-2655115, +91-9829794668
E-mail: airport@comforttours.com

गरीब क्यों हैं किसान-मजदूर ?

वेदव्यास

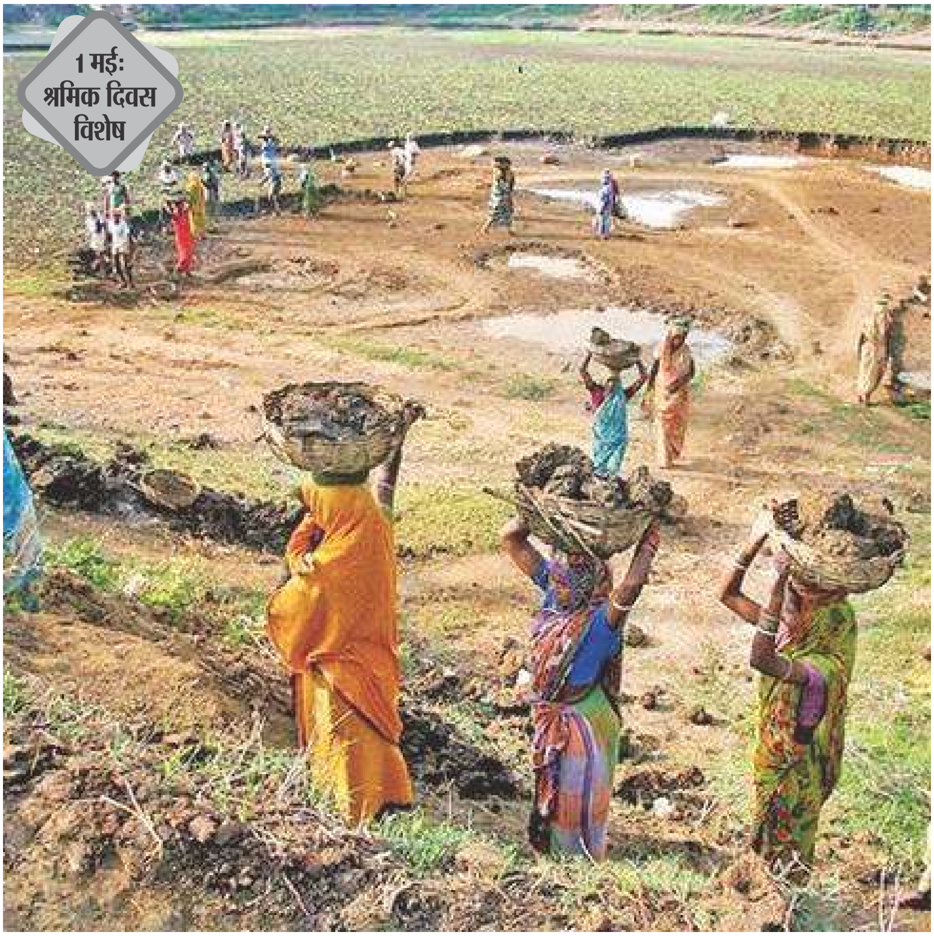

दुनिया चारों तरफ से बदल रही है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी से, नई वैश्विक आर्थिक नीतियों से और जलवायु परिवर्तन से मनुष्य और समाज के सभी विरोधाभास गहरे और तेज हो रहे हैं। लेकिन दूसरे युद्ध के अनुभव को लेकर भी हम आज ये नहीं समझ रहे हैं कि हमारी ये दुनिया पहले से अधिक असमानता और सामाजिक अन्याय से पीड़ित है। हर एक देश में दो तरह के देश बनते जा रहे हैं। गांवों और शहरों के बीच, गरीबों और अमीरों के बीच, शिक्षा, स्वास्थ्य और मानवाधिकारों को लेकर भारी टकराव बढ़ रहा है।

समस्या आज ये है कि किसी भी देश की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक व्यवस्था में समता और सद्भाव को लेकर स्थितियां सुख और शांति को नष्ट कर रही हैं। भारत में आजादी के अमृत महोत्सव के रंग-ढंग देखकर लगता है कि जहां शासन-प्रशासन, उत्सव मना रहा हैं, वहां आम जनता अपने अभाव-अभियोगों को लेकर ही जाति, धर्म, क्षेत्रीयता और भाषाओं के हथियारों से लड़ रही है। विकास भी हो रहा है, लेकिन असमानता, भूख, गरीबी, कुपोषण और सामाजिक अशांति भी बढ़ रही है। विकास और परिवर्तन के इस महाभारत में पांडव जीतकर भी हार रहे हैं, तो कौरव हारकर भी जीत रहे हैं। किसान अपने खेत-खलिहान छोड़कर सड़कों पर सत्याग्रह कर रहा है, तो मजदूर कल-कारखानों से विस्थापित होकर दाना-पानी ढूंढ रहा है। सोचने वाली बात ये है कि भारत जैसा विशाल लोकतंत्र सामाजिक-आर्थिक विषमताओं को लेकर शीत युद्ध का समाधान धर्म और जाति की पुरानी परम्पराओं, आस्थाओं, देव दर्शन और पुराने कर्म फल में खोज रहा है। ऐसे विभाजित सामाजिक-सांस्कृतिक माहौल में देश की एकता भी विविधता में बदल रही है। हमें इस प्रवृत्ति को भी रोकने का प्रयास इसलिए करना होगा कि हमें विकास के साथ सद्भाव की ज्यादा आवश्यकता है और परिवर्तन के पहले सांस्कृतिक सहिष्णुता की जरूरत है। हम शासन व्यवस्था को धर्म, जाति, भाषा और क्षेत्रीयता के आधार पर मनचाहा विभाजित नहीं कर सकते। यदि देश एक शरीर है और एक आत्मा है तो फिर एक प्रकृति और न्याय ही उसका एक परमात्मा है। आज हमारी दिक्कत ये है कि हम समाज के पिछड़े वर्गों को शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार से नहीं जोड़ रहे हैं। हम आदिवासियों को उनके जल, जंगल और जमीन से वंचित कर रहे हैं। हम महिलाओं को उपभोक्ता संस्कृति की तरह इस्तेमाल कर रहे हैं। युवाओं को बेरोजगार बनाते जा रहे हैं। बच्चों, बूढ़ों, अनाथों के प्रति उपेक्षा का बर्ताव कर रहे हैं। अपनी आजादी के संघर्षमय इतिहास को भी नकारते हुए संविधान और लोकतंत्र को कमजोर कर रहे हैं। आज गांव और गरीब का मजाक बनाया जा रहा है। चुनावों में अपराधी, बाहुबली, धर्म और जातीय सेनाओं तथा मतदाता को लोभ, लालच और दुष्प्रचार के मायाजाल में फंसाने का बोलबाला है। व्यक्ति मानवाधिकारों से वंचित है और न्याय इतना महंगा और दुर्लभ हो गया है कि राष्ट्रगान में शामिल भारत के भाग्य विधाता की परिभाषा ही बदल गई है और महात्मा गांधी के सत्य के प्रयोगों का खुलेआम दमन हो रहा है। हम निरंतर असहिष्णु और अराजकतापूर्ण समाज बना रहे हैं। विकास का मुखौटा लगाकर गांव और गरीब को आसमान के तारे तोड़कर लाने का सपना दिखाने की बजाय हम विकास को सद्भाव से जोड़ें और देश को सांस्कृतिक एकता की दिशा में आगे बढ़ाएं। क्योंकि समय बदल रहा है।

Welcome in the world of comfort

SUNIL GARMENTS

SUNIL TEXTILES

Dangi Saree's

With an exclusive range of

- Suiting
- Shirting
- Suitlengths
- Shawls
- Blankets
- Bedsheets

Exclusive Readymade Brands

- Kurtis

Party Wear

- Sarees & Lehangas

61, NORTH SUNDERWAS, UDAIPUR : 9414169044

यूपी, दिल्ली समेत कई राज्यों में अलग-अलग विभागों की रिपोर्ट में खुलासा

कम हो रही बच्चों की लंबाई और वजन

एनएफएचएस-5 (राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य का पांचवा सर्वे) के मुताबिक कुपोषण भारत की सबसे गंभीर विकास चुनौतियों में है। यह बीमारी का बोझ बढ़ाता है। यह नाटापन की बड़ी वजह है, जो लम्बी अवधि से आनुवांशिकता में भी बदल सकती है। शून्य से 6 वर्ष के बच्चों में उम्र के सापेक्ष कम उंचाई, नाटापन, तो उंचाई और उम्र के सापेक्ष कम वजन कमजोरी का संकेत है।

अजीत प्रताप सिंह

कुपोषण कद का दुशमन बन रहा है। भारत में उम्र के सापेक्ष बच्चों की लंबाई कम है। औसतन हर चौथा बच्चा नाटेपन का शिकार है। वजन भी मानक से कम है। यूपी में 44 प्रतिशत बच्चों पर इसका असर देखा गया है और कई जिलों में तो यह आंकड़ा 50 प्रतिशत से भी ज्यादा है। बिहार व झारखंड में क्रमश: 42.9 व 32त्न , उत्तराखंड में 27 फिसदी बच्चे 'ग्रोथ फेल्योर' से पीड़ित हैं।

उत्तर प्रदेश के बाल विकास विभाग की ओर से जनवरी 2024 में 75 जिलों में संचालित 1.88 लाख आंगनबाड़ी केंद्रों के छह साल से कम उम्र के 1.89 करोड़ बच्चों की जांच की गई, तो 83.38 लाख बच्चो गंभीर या मध्यम रूप से कम लंबाई के पाए गए।

दिल्ली में सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले 4.08 लाख बच्चे कुपोषित हैं। उनका वजन सामान्य से भी कम है। हजारों की संख्या में बच्चों की लंबाई भी सामान्य से कम मिली। दिल्ली सरकार के शिक्षा निदेशालय ने बच्चों के स्वास्थ्य को लेकर नवंबर 2022 में बॉडी मास इंडेक्स की जांच कराई थी। कुल 1023 स्कूलों में 18 लाख से अधिक बच्चों की जांच की गई। उत्तराखंड में पांच साल तक के 27 फीसदी बच्चे कुपोषण से नाटे हैं। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण की रिपोर्ट के अनुसार, पांच साल तक के बच्चों की कुल संख्या 13 लाख 48 हजार है। बिहार में नाटेपन का शिकार शून्य से पांच वर्ष बच्चों की संख्या 48.3 से घटकर 42.9 फीसदी हो गई है।

उम्र के हिसाब से लंबाई

विटामिन व प्रोटीन युक्त आहार की कमी से लंबाई प्रभावित होती है।
जन्म पर : 50 सेमी
एक साल में : 75 सेमी
दो साल में : 88 सेमी
चार साल में : 100 सेमी
इसके बाद : प्रति वर्ष छह–सात सेमी की वृद्धि

- –**डॉ करुण आर्या**, विभागाध्यक्ष, बाल रोग विभाग जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज

''कुपोषण की चपेट में आने के 15–20 दिन में ही बच्चे का वजन घटने लगता है। छह महीने तक केवल मां का दूध, इसके बाद पौष्टिक आहार कुपोषण का बचाव है।

प्रो. यशवंत राव, जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज

हर चौथा नाटा बच्चा भारत का

लेवल्स एंड ट्रेंड इन चाइल्ड मालन्यूट्रिशन 2023 संयुक्त राष्ट्र बाल कोष, डब्ल्यूएचओ और वर्ल्ड बैंक की संयुक्त रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया का हर चौथा कम लंबाई का बच्चा भारत में है। जहां पांच वर्ष से कम उम्र के 31.7 फिसदी बच्चों की लम्बाई उम्र के सापेक्ष कम है। पूरे विश्व में 22.3 फीसदी बच्चे उम्र के लिहाज से ठिगने हैं। भारत में यह आंकड़ा घटकर 31.7 फीसदी अर्थात 3.61 करोड़ बच्चे उम्र के सापेक्ष कम लंबाई के हैं। भारत उन 28 देशों में हैं, जहां कुपोषण के चलते बच्चों का कद घटा है।

ग्वाटेमाल की महिलाएं नाटी नीदरलैंड के पुरुष लंबे

नीदरलैंड के पुरुष और लातवियाई महिलाएं दुनिया में सबसे लंबी होती हैं। ग्वाटेमाला की महिलाएं और पूर्वी तिमोर के पुरुष दुनिया के सबसे छोटे कद के हैं। अवर वर्ल्ड इन डेटा की रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका के लोगों की औसत लंबाई 177.10 सेमी है।

सबसे ज्यादा नाटेपन वाले जिले

जिला	जांच	नाटापन प्रतिशत
बांदा	1,64,804	55%
चित्रकूट	1,04,545	56%
बलरामपुर	2,81,301	55%
सीतापुर	5,69,786	52%
सोनभद्र	2,22,130	51%

सबसे कम नाटेपन वाले जिले

जिला	जाचं	नाटापन प्रतिशत
मऊ	2,13,840	26%
नोएडा	98,530	31%
अमेठी	1,78,407	35%
बस्ती	2,53,545	35%
अलीगढ़	3,53,643	38%

1,89,50,213
बच्चों की हुई जांच

83,38,093
बच्चे उम्र के सापेक्ष नाटे

भारत में पुरुषों की औसत लंबाई

164.95 सेमी

(विश्व में 178 स्थान पर)

महिलाओं की औसत लंबाई

153 सेमी (विश्व में 53वें स्थान पर)

नाटेपन की सबसे ज्यादा दर वाले राज्य

मेघालय - 46.5%

बिहार - 42.9%

यूपी - 39.7%

Director
Vipin sharma

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

Director
Mohit Panwar

shreenath® Travellers Pvt. Ltd.

Head Office :- 9 Kan Nagar , Main Road , Near sub city center , Udaipur (Raj.)

Ph. :-77270-56655 , 77270-59955

Daily parcel service Available

Daily services :- Pune, Mumbai, Vapi, Valsad, Chikli, Navsari, Surat, Ankleshwar, Bharuch, Baroda, Ahmedabad Gandhinagar, Himmatnagar, Junagadh, Jetpur, virpur, Gondal, Rajkot, Ajmer, Jaipur, Jodhpur, Bikaner, Kota

Udaipur :- 3, yatri hotel Udaipole
Ph.:- 77270-59955 , 77270-49955

Nathdwara :- Near Hotel Shree vilas, N.H 8
Ph.:- 77270-28855 , 02953-231333

कैसा लगा यह अंक

प्रत्यूष

इस अंक में कौन सा आलेख आपको ज्यादा पसंद आया। आप किन विषयों पर आलेख पढ़ना ज्यादा पसंद करेंगे? किस विषय पर आप हमें अपना मौलिक आलेख, शोध, कविता, कहानी भेजना चाहेंगे। कृपया हमें लिखें। आपके रचनात्मक सुझावों का सदैव स्वागत होगा।

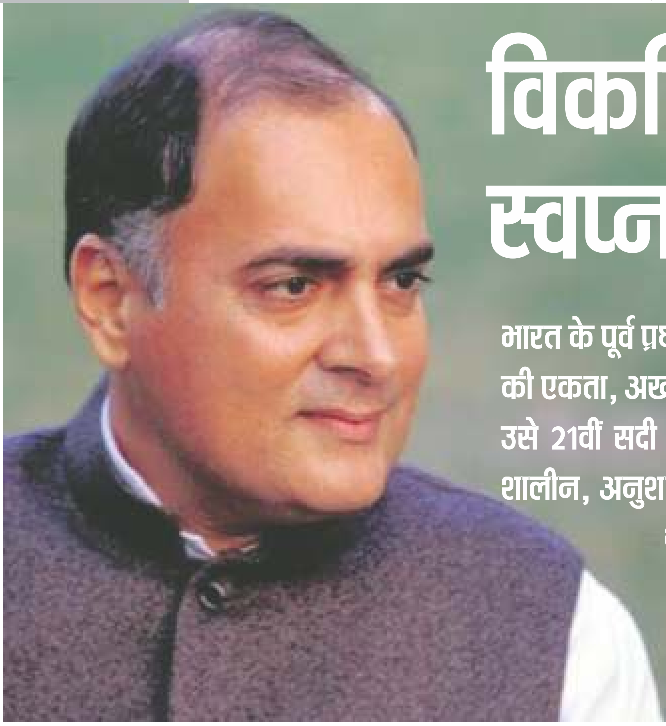

विकसित भारत के स्वप्नदृष्टा राजीव गांधी

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व राजीव गांधी लोकप्रिय नेता थे। जिन्होंने देश की एकता, अखण्डता और उसके लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करते हुए उसे 21वीं सदी की ओर ले जाने का सपना संजोया था। राजीव बेहद शालीन, अनुशासनप्रिय, आत्मविश्वासी और स्पष्टवादिता की प्रतिमूर्ति थे। देश के सबसे युवा प्रधानमंत्री के रूप में उनका कार्यकाल बहुत छोटा था लेकिन कार्य काफी बड़े और महत्वपूर्ण थे और राष्ट्र को अन्तर्राष्ट्रीय जगत में अग्रणी श्रेणी में खड़ा करने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ थे।

पंकज कुमार शर्मा

फिरोज गांधी व पूर्व प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के ज्येष्ठ पुत्र राजीव गांधी का जन्म 20 अगस्त 1944 में हुआ था। दून स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर वे आगे की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड गए। उन्होंने ट्रिनिटी कॉलेज केम्ब्रिज में मेकेनिकल इंजीनियरिंग की पढाई की तथा विमान चलाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसी दौरान उनकी मुलाकात वहीं अध्ययन करने वाली सोनिया से हुई जो आगे चलकर उनकी सहधर्मिणी बनी। विमान प्रशिक्षण लेने के बाद उन्होंने इंडियन एयर लाइन्स में पायलट की नौकरी की। नेहरू परिवार के कुलदीपक होने के बावजूद उन्होंने भारतीय राजनीति में प्रवेश नहीं किया लेकिन बदली हुई परिस्थितियों ने उन्हें राजनीति में आने के लिए विवश कर दिया। दरअसल अपनी पत्नी सोनिया गांधी व बच्चे प्रियंका व राहुल के साथ वे एक आम भारतीय की तरह जीवन बसर कर रहे थे कि 1980 में छोटे भाई संजय गांधी की विमान दुर्घटना में मृत्यु के बाद उन्हें राजनीति में प्रवेश करना पड़ा। राजीव का चुम्बकीय आदर्श व्यक्तित्व ही था कि राजनीति का पहला पाठ भी नहीं पढ़े होने के बावजूद 1981 में उन्होंने अमेठी का चुनाव 36 वर्ष की आयु में लड़ा और जनता ने उन्हें भारी मतों से जिताकर महानायक के रूप में राजनीतिक आभामण्डल प्रदान किया।

21 मई : पुण्यतिथि

अमेठी सांसद बनने के एक वर्ष बाद वे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव बने और इन्दिरा गांधी के उत्तराधिकारी के रूप में सामने आए। 31 अक्टूबर 1984 को प्रधानमंत्री इंन्दिरा गांधी की निर्मम हत्या के बाद राजीव गांधी को देश की बागडोर सम्भालनी पडी़। दिसम्बर 1984 में हुए मध्यावधि चुनाव में नेतृत्व में कांग्रेस को शानदार सफलता मिली। संसद में तीन चौथाई बहुमत से वे सरकार बनाने में कामयाब हुए और एक सशक्त प्रधानमंत्री के रूप में उभरे। भारतीय राजनीति में राजीव आधुनिकता एवं युवा आकांक्षा के प्रतीक थे। अपने प्रधानमंत्रित्वकाल में उनकी साफ-सुथरी छवि, ईमानदारी, स्पष्टवादिता का काफी प्रभाव पड़ा। उन्होंने पंजाब, मिजोरम, असम की वर्षों से चली आ रही समस्याओं को निपटाने में गहरी दिलचस्पी ली और समाधान का प्रयास किया। राजीव विराट चेतना के प्रतीक थे। उनका व्यक्तित्व बेहद आकर्षक था वे अपने पिता की तरह विनम्र और सरल स्वभाव के थे उनमें अहंकार की भावना लेश मात्र भी नहीं थी। उन्होंने राजनीति में सफलता और असफलता दोनों ही देखी फिर भी धैर्य रखते हुए कठिन परिस्थितियों का सामना किया। राजीव का सपना था कि भारत विज्ञान टेक्नोलॉजी, औद्योगिक क्षेत्र में ज्यादा मजबूत बनकर विश्व में अपना स्थान बना सकता है इसके लिए वे सतत प्रयत्नशील रहे। अन्तर्राष्ट्रीय हालातों पर उनकी पैनी दृष्टि थी। उन्होंने छह देशों की पहल पर परमाणु मुक्त विश्व जैसे अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों की अगुवाई की। श्रीलंका में शांति सेना भेजने का उन्होंने महत्वपूर्ण फैसला लिया था। राजीव गांधी का खेलों और खिलाड़ियों से सदा प्यार रहा। 1982 में एशियाई खेलों की सफलता में काफी रूचि ली। कैम्ब्रिज के दिनों में वे अच्छे खिलाड़ी थे। 21 मई 1991 के दक्षिण भारत में पेरम्बदूर में आतंकवाद की अन्तर्राष्ट्रीय साजिश का शिकार नहीं होते तो निश्चित ही उनके सपने साकार होते और भारत एक विश्व शक्ति होता।

नीलकण्ठ

फर्टिलिटी एण्ड वुमन केयर सेन्टर

डॉ. आशिष सूद

सलाहकार इंटेंसिविस्ट और एनेस्थेटिस्ट

टॉल फ्री नं. : 1800 30020 190
वर्तमान / पूर्व रोगी : +91-97846.00614
अपोईन्टमेन्ट : 0294-6530105, 2442595

Neelkanthfertility@gmail.com
www.Neelkanthivfcentre.com

10-11, स्वामी नगर, डॉक्टर्स लेन, RSEB ऑफिस के पास, सेलिब्रेशन मॉल के पीछे, भुवाणा, उदयपुर (राज.)

http://www.facebook.com/NeelkanthfertilityHosital
https://www.youtube.com/UCOin3codfuZjYyPWTVAob8w

लोक मंगल के सारथी देवर्षि नारद

देवर्षि नारद धर्म-प्रचार व लोक कल्याणार्थ सदैव भ्रमण पर रहते हैं। शास्त्रों ने इन्हें भगवान का मन कहा है। इसी कारण सभी युगों में, सब लोकों में, समस्त विद्याओं में, समाज के सभी वर्गों में उनकी सदा उपस्थिति रहती है। वे सृष्टि रचयिता ब्रम्हाजी के छठे मानस पुत्र हैं। श्रीमद्‌भगवद् गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने इनकी महत्ता को स्वीकार करते हुए कहा है - देवर्षीणां च नारदः । अर्थात देवर्षियों में मैं नारद हूं।।

श्रीमद्‌भगवद् गीता के दशम अध्याय के 26वें श्लोक में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने इनकी महत्ता को स्वीकार करते हुए कहा है– देवर्षीणाम् च नारद। 'देवर्षियों में मैं नारद हूं।' 'श्रीमद्भागवत महापुराण का कथन है, कि सृष्टि में भगवान ने देवर्षि नारद के रूप में तीसरा अवतार ग्रहण किया और साचतंत्र का उपदेश दिया जिसमें सकर्मो के द्वारा भव-बंधन से मुक्ति का मार्ग दिखाया गया है।' वायुपुराण में 'देवर्षि' के पद और लक्षण का वर्णन है– ''देवलोक में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले ऋषिगण देवर्षि नाम से जाने जाते हैं। भूत, वर्तमान एवं भविष्य– तीनों कालों के ज्ञाता, सत्यभाषी, स्वयं का साक्षात्कार करके स्वयं में सम्बद्ध, कठोर तपस्या से लोकविख्यात, गर्भावस्था में ही अज्ञानरूपी अंधकार के नष्ट हो जाने से जिनमें ज्ञान का प्रकाश हो चुका है, ऐसे मंत्रवेत्ता तथा अपने ऐश्वर्य (सिद्धियों) के बल से सब लोकों में सर्वत्र पहुँचने में सक्षम, मंत्रणा हेतु मनीषियों से घिरे हुए देवता, द्विज और नृप 'देवर्षि' कहे जाते हैं।'' इसी पुराण में आगे लिखा है कि धर्म, पुलस्त्य, ऋतु पुलह, प्रत्यूष, प्रभास और कश्यप–इनके पुत्रों को देवर्षि का पद प्राप्त हुआ। धर्म के पुत्र नर एवं नारायण, ऋतु के पुत्र बालखिल्यगण, पुलह के पुत्र कर्दम, पुलस्त्य के पुत्र कुबेर, कश्यप के पुत्र नारद और पर्वत के पुत्र देवर्षि माने गए, किन्तु जनसाधारण देवर्षि के रूप में केवल नारदजी को ही जानता है।

उनकी जैसी प्रसिद्धि किसी और को नहीं मिली। वायुपुराण में बताए गए देवर्षि के सारे लक्षण नारदजी में पूर्णतः हैं। महाभारत के सभापर्व के पांचवे अध्याय में नारद जी के व्यक्तित्व का परिचय इस प्रकार दिया गया है– देवर्षि नारद वेद और उपनिषदों के मर्मज्ञ, देवताओं के पूज्य, इतिहास–पुराणों के विशेषज्ञ, पूर्व कल्पों (अतीत) की बातों को जानने वाले, न्याय एवं धर्म के तत्वज्ञ शिक्षा, व्याकरण, आयुर्वेद, ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान, संगीत–विशारद, प्रभावशाली वक्ता, मेधावी, नीतिज्ञ, कवि, महापण्डित, बृहस्पति जैसे महाविद्वानों की शंकाओं का समाधान करने वाले, धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष के यथार्थ ज्ञाता, योगबल से समस्त लोकों के समाचार जान सकने में समर्थ, सांख्य एवं योग के सम्पूर्ण रहस्य को जानने वाले, देवताओं–दैत्यों को वैराग्य का उपदेश देने वाले कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य में भेद करने में दक्ष, समस्त शास्त्रों में प्रवीण, सद्‌गुणों के भण्डार, सदाचार के आधार, आनंद के सागर, परम तेजस्वी, सभी विद्याओं में निपुण, सबके हितकारी और सर्वत्र गति वाले हैं। 'अट्ठारह महापुराणों में एक नारदोक्त पुराण बृहन्नारदीय पुराण' के नाम से प्रख्यात है। मत्स्यपुराण में वर्णित है कि नारदजी ने बृहत्कल्प प्रसंग में जिन अनेक धर्म आख्यायिकाओं को कहा है, 25,000 श्लोकों का वह महाग्रंथ ही नारदमहापुराण है। वर्तमान में उपलब्ध नारदपुराण 22,000 श्लोकों वाला है। 3,000 श्लोकों की न्यूनता प्राचीन पाण्डुलिपि का कुछ भाग नष्ट हो जाने के कारण हुई है। नारदपुराण में लगभग 750 श्लोक ज्योतिषशास्त्र पर हैं। इनमें ज्योतिष के तीनों स्कन्ध सिद्धांत, होरा और संहिता की सर्वांगीण विवेचना की गई है।

देवर्षि नारद अपने पूर्व जन्म में गंधर्व थे। एक बार ब्रह्माजी की सभा में सभी देवता और गंधर्व भगवान नाम का संकीर्तन करने के लिए एकत्र हुए। वहां नारदजी को सभा में स्त्रियों के साथ विनोद करते देख ब्रह्माजी ने इन्हें दरिद्र होने का शाप दे दिया। उस शाप के

प्रभाव से नादरजी का जन्म एक दरिद्र परिवार में हुआ। जन्म के समय ही इनके पिता की मृत्यु हो गई।

इनकी माता दासी का काम करके इनका भरण-पोषण करने लगीं। एक दिन इनके गांव में कुछ महात्मा आए और चातुर्मास बिताने के लिए वहीं ठहर गए। नारदजी बचपन से ही सुशील थे। वे खेलकूद छोड़कर उन साधुओं के पास ही बैठे रहते और उनकी छोटी-से-छोटी सेवा भी बड़े मन से करते थे। जाते समय महात्माओं ने प्रसन्न होकर उन्हें भगवान नाम का जप एवं भगवान के स्वरूप के ध्यान का उपदेश दिया।

एक दिन सांप के काटने से इनकी मां की भी मृत्यु हो गई। उस समय उनकी आयु मात्र पांच वर्ष थी। माता के वियोग में वे भक्तभाव से प्रेरित होकर भजन करने लगे।

एक दिन जब नारदजी वन में बैठकर भगवान के स्वरूप का ध्यान कर रहे थे, अचानक उनके हृदय में भगवान प्रकट हुए और अपने दिव्य स्वरूप की झलक दिखा कर अंर्तध्यान हो गए। भगवान के पुन: दर्शन करने के लिए नारदजी व्याकुल होने लगे। उसी समय आकाशवाणी हुई- 'हे पुत्र ! अगले जन्म में तुम मेरे पार्षद रूप में पुन: दर्शन प्राप्त करोगे।' समय आने पर नारदजी का पंचभौतिक शरीर छूट गया। कल्प के अंत में वे ब्रह्माजी के मानस-पुत्र 'नारद' के रूप में अवतीर्ण हुए। देवर्षि नारद को भगवान के भक्तों में सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। इनके द्वारा प्रणीत 'भक्ति-सूत्र' में भक्ति की बहुत सुंदर व्याख्या है। हमेशा भक्तों के भले के लिए ब्रह्मांड में विचरने वाले नारदजी को समस्त लोकों में निर्बाध गति का वरदान प्राप्त है।

-मोहन गौड़

कविता

नारी

बसंत त्रिपाठी

संस्कारों की पाठशाला है नारी।
गृह-प्रबन्ध की राजशाला है नारी।।
धर्म-कर्म की पर्याय है नारी।
हर मर्ज का उपाय है नारी।।
चहकते बच्चों की फुलवारी है नारी।
स्नेह-वात्सल्य की किलकारी है नारी।।
सुख-दुख की सहचरी है नारी।
दर्द-वेदना की प्रहरी है नारी।।
घर के बजट की प्रभारी है नारी।
अल्प बचत की तिजोरी है नारी।।

प्रत्यूष
प्रत्यूष पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें
75979 11992, 94140 77697

Kamlesh Hathi
Mob.: 9829084220
9462623355

91.6 हॉलमार्क ज्वेलरी

Kohinoor
Jewellers
(EXCLUSIVE SHOP)

Hallmark Licence No.: HM/C 8490038523/397

A Trusted Place of 91.6 Gold & Silver Jewelleries & Gem Stones.
Tel.: 0294-241715, 2522823 (S)
Email: kohinoorjewellersudr@gmail.com

108, Bhamashah Marg, Near Oswal Bhawan Udaipur - 313 001 (Raj.)

तोड़ पाएगी भाजपा दक्षिण का 'तिलिस्म'?

गौरव शर्मा

लोकसभा चुनाव में भाजपा ने जीत की हैट्रिक के साथ बड़े विस्तार का लक्ष्य रखा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एनडीए के लिए चार सौ पार, तो अपनी पार्टी के लिए 370 सीटें जीतने का नारा दिया है। हालांकि, इन लक्ष्यों को हासिल करने के लिए भाजपा को हिंदी पट्टी में पुराना प्रदर्शन बरकरार रखते हुए कांग्रेस ही नहीं, बल्कि क्षेत्रीय दलों के दबदबे में सेंध के साथ दक्षिण भारत के तिलिस्म को भी तोड़ना होगा। तमिलनाडु और केरल में क्रमश: द्रमुक व वामगढ़ में छोटा सा सुराख कर पाना भी भाजपा के लिए बड़ी चुनौती है।

भाजपा की निगाहें 300+ के लिए उन 133 सीटों पर है, जहां 2019 के चुनाव में पार्टी जीत हासिल करने में नाकाम रही थी। इनमें भी खास जोर उन 72 और 31 सीटों पर हैं, जहां पार्टी दूसरे और तीसरे स्थान पर रही थी। पार्टी ने इन सीटों के लिए इस बार खास रणनीति बनाई है। हालांकि इन सीटों पर जीत के लिए पार्टी को क्षेत्रीय दलों की दीवार को लांघना जरूरी है।

खास तौर पर भाजपा की निगाहें पश्चिम बंगाल और ओडिशा पर हैं, जहां पार्टी ने बीते चुनाव में चौंकाने वाला प्रर्दशन किया था। बंगाल में भाजपा की सीटों की संख्या 2 से 18, तो ओडिशा में एक से आठ पहुंच गई थी। दूसरे स्थान वाली 33 सीटें भी इन्हीं दो राज्यों से हैं। पार्टी ने बीते पांच साल में यहां संगठन को मजबूत करने और माहौल अपने पक्ष में बनाने का प्रयास किया है।

आंध्र में गठबंधन

- पार्टी ने आंधप्रदेश में मुख्य विपक्षी दल टीडीपी और जनसेना से गठबंधन किया है।
- पार्टी ने केरल में पांच, तमिलनाडु में चार सीटें चिह्नित की थीं, जहां बीते चुनाव में उसे एक लाख तक वोट मिले थे।
- पार्टी की तेलंगाना की कुल 17 में से उन नौ सीटों पर भी निगाह है, जहां बीते चुनाव में पार्टी तीसरे स्थान पर रही थी।

तमिलनाडु अब भी चुनौती

पददुचेरी की एक सीट व तमिलनाडु की 39 सीटों पर द्रमुक नीत 'इन्डी' एलायंस का खासा प्रभाव दिखाई दिया। कमजोर होती अन्नाद्रमुक (एम.जी रामचन्दन द्वारा स्थापित व जयललिता द्वारा पल्लवित) की हालत के बीच भाजपा ने यहां इस बार अपनी जड़ें जमाने की भरपूर कोशिश की। भाजपा व अन्नाद्रमुक किसी तरह की संख्या के दावे से बच रहे हैं। भाजपा चार–पांच सीटों पर अच्छे परिणाम की आशा लगाए हुए है। यदि उसके पक्ष में मतदान प्र.श. बढ़ता भी है, तो यह उसकी बड़ी उपलब्धि होगी। केरल की सभी 20 सीटों पर इन्डी अलायंस अपनी जीत पक्की मान रहा है। तमिलनाडु में 19 व केरल में 26 अप्रेल को मतदान पूर्ण हो चुका है।

विस्तार कहां, कहां हुआ घाटा

2014 के चुनाव के मुकाबले बीते चुनाव में पार्टी को प. बंगाल में 16, कर्नाटक में 8, ओडिशा में 7, हरियाणा और तेलंगाना में 3-3 सीटों का लाभ हुआ था। इसके उलट उसे यूपी में 9, बिहार में 5 और आंध्र प्रदेश में दो सीटों का नुकसान हुआ था।

स्ट्राइक रेट के साथ मत प्रतिशत में बढ़ोतरी

बीते चुनाव में भाजपा 2014 के मुकाबले आठ सीटें ज्यादा 436 सीटों पर लड़ी और उसे 21 सीटों का लाभ हुआ। इस दौरान पार्टी के मतप्रतिशत में 6.4 फीसदी की बढ़ोतरी हुई। पार्टी की रणनीति मत प्रतिशत में और बढ़ोतरी कर विस्तार की संभावना को बढ़ाने की है।

दूसरे स्थान का गणित

- भाजपा पिछले चुनाव में जिन 72 सीटों पर दूसरे स्थान पर रही, उन्हीं सीटों को जीतना अब भी बड़ी चुनौती है।
- 15 सीटों पर कांग्रेस, 22 पर तृणमूल ने दी पटखनी
- 15 पर सपा-बसपा, 11 पर बीजद, 5 पर अन्नाद्रमुक
- भाजपा जिन 31 सीटों पर तीसरे स्थान पर रही इनमें 23 सीटें केरल व तेलंगाना की हैं।
- पांचवें, छठे और सातवें स्थान वाली 23 सीटों में 20 सीटें तो अकेले आंध्रप्रदेश की हैं।

यूपी से बड़ी उम्मीद

- यूपी में भाजपा 16 सीटों पर दूसरे स्थान पर थी। इनमें कांग्रेस ने एक बसपा ने 10 और सपा ने 5 सीटें जीती थीं।
- बाद में आजमगढ़ और रामपुर में हुए उपचुनाव में पार्टी ने बाजी मार ली थी।
- इस बार पार्टी इन 16 सीटों को हासिल करने पर जोर लगा रही है।

व्यक्तित्व

सुधा मूर्ति : सादगी से शिखर तक

जानी-मानी लेखिका, समाज सेविका और इंफोसिस फाउंडेशन की पूर्व चेयरमैन सुधा मूर्ति (23) को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राज्यसभा के लिए मनोनीत किया है। सादगी पूर्ण जीवन से शिखर तक पहुंचने वाली सुधा मूर्ति भारतीय महिलाओं की प्रेरणास्रोत हैं।

सुधा मूर्ति टाटा इंजीनियरिंग एंड लोकोमोटिव कंपनी यानी टेल्को की ओर से नियुक्त की जाने वाली पहली महिला इंजीनियर थीं। उनकी शादी इन्फोसिस के फाउंडर नारायण मूर्ति से हुई। वे कन्नड़ और अंग्रेजी में कई उपन्यास, तकनीकी किताबें और यात्रा वृतांत लिख चुकी हैं। बच्चों के लिए लिखा उनका साहित्य काफी लोकप्रिय है। वो वेंचर कैपिटलिस्ट अक्षता मूर्ति की मां हैं। अक्षता ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक की पत्नी हैं।

सुधा मूर्ति अक्सर कहती हैं कि इंफोसिस की स्थापना के लिए 1981 में अपने पति नारायण मूर्ति को उन्होंने दस हजार रुपए दिए थे। आज उनकी संपत्ति 36,690 करोड़ रुपए है। इसके बावजूद मूर्ति दंपति सादगी से जीवन जीते हैं। खुद सुधा मूर्ति की संपत्ति 775 करोड़ रुपए की है, लेकिन उनका रहन-सहन बहुत सादा है।

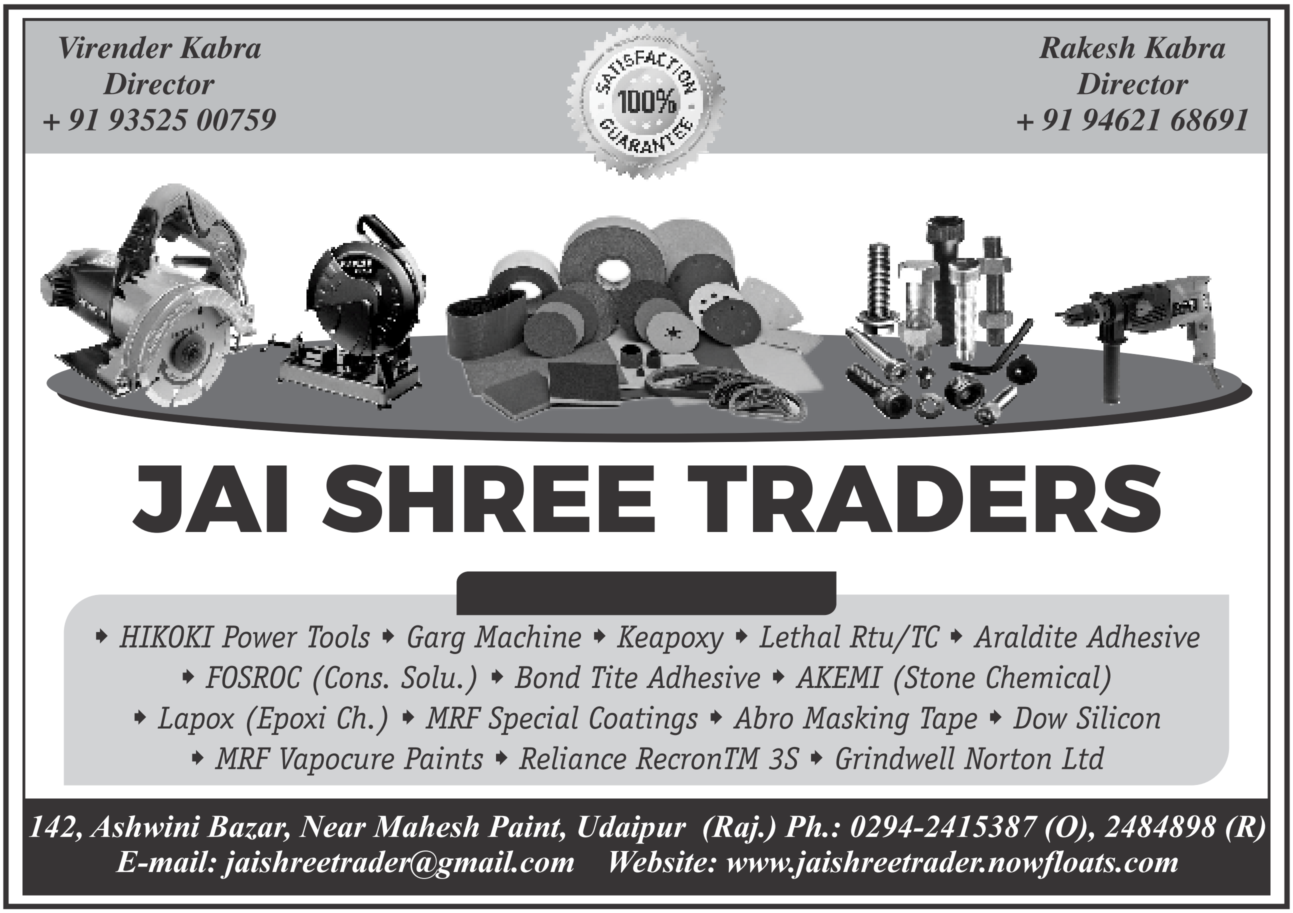

दूर रहेंगी गर्मी की बीमारियां

डॉ. दिनेश पुरोहित

गर्मियों में चमचमाती सूरज की किरणों की तपन और गर्म हवा बाहरी के साथ शरीर का तापमान भी बढ़ा देती हैं। परिणामस्वरूप शरीर कई तरह की बीमारियों की चपेट में आ जाता है। सिरदर्द से लेकर अपच, डायरिया जैसी विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं से जूझना पड़ता है। ऐसी स्थिति में सावधानी बहुत जरूरी है। आंकड़ों की माने तो गर्मियों के मौसम में हॉपीस्टल में आने वाले लोगों की संख्या बाकी मौसमों के मुकाबले अधिक होती है। इसीलिए इसे बीमारियों का मौसम कहा जाता है। गर्मियों में सेहतमंद रहने के लिए विशेष सावधानियां बरतनी जरूरी है। इसके लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि इस मौसम में कौन-कौन सी स्वास्थ्य समस्याएं होती हैं और इनसे कैसे निपटा जाए।

तापमान में अचानक बदलाव आने से ठंडा गर्म की समस्या हो जाती है। हम अक्सर गर्मियों में ऑफिस पहुंच कर या बाहर से घर आकर गर्मी से राहत पाने के लिए कम तापमान पर एसी चला देते हैं या फिर एकदम बर्फ का ठंडा पानी पी लेते हैं, जो सेहत के लिए काफी नुकसानदायक साबित हो सकता है। शरीर के तापमान में अचानक 7 डिग्री से अधिक बदलाव शरीर की प्रतिरोधक शक्ति को कमजोर कर देता है, जिस कारण बार-बार जुकाम, गला खराब होना, वायरल इंफेक्शन जैसी समस्याएं हो सकती हैं।

जल और खाद्यजनित रोग

डायरिया, टाइफाइड और पीलिया को खाद्य जनित और जलजनित रोग माना जाता है। ये दूषित खाद्य पदार्थों और दूषित जल के सेवन से होते हैं। वैसे तो ये किसी को कभी भी हो सकते हैं, लेकिन गर्मियों में इन बीमारियों के मामले काफी बढ़ जाते हैं।

फूड पॉयजनिंग

गर्मी के मौसम में बासी खाना खाने, दूषित जल पीने व बाहर के कटे-खुले खाद्य पदार्थों को खाने के कारण फूड पॉयजनिंग व अनेक प्रकार के संक्रमणों का खतरा बढ़ जाता है। फूड पॉयजनिंग गंभीर होकर घातक भी हो सकता है।

अधिक पसीना आना

पसीना आना एक स्वाभाविक बायलॉजिकल प्रक्रिया है। गर्मियों में बाहर का तापमान बढ़ने से शरीर का तापमान भी बढ़ जाता है। इस ताप को स्थिर रखने के लिए शरीर से अधिक पसीना निकलता है और यह अधिक पसीना आना ही डीहाइड्रेशन का कारण बनता है। इसलिए जरूरी है कि शरीर में जल के स्तर को बनाए रखा जाए।

अपच और भूख न लगना

गर्मियों में बाहरी और आंतरिक तापमान बढ़ने से कई लोगों को पाचन तंत्र से संबंधित समस्या हो जाती है। तापमान में बढ़ोतरी होने से एंजाइम की कार्य प्रणाली भी प्रभावित होती है। इससे खाना ठीक प्रकार से नहीं पचता। तेल मसालेदार भोजन और कैफीन के अधिक मात्रा में सेवन से भी अपच की समस्या हो जाती है।

डीहाइड्रेशन

डीहाइड्रेशन गर्मियों की सबसे सामान्य समस्या मानी जाती है। गर्मियों में बाहरी तापमान बढ़ने से शरीर का तापमान भी बढ़ जाता है। ऐसे में शरीर के ताप को स्थिर बनाए रखने के लिए अधिक मात्रा में पसीना निकलता है। अत्यधिक पसीना आने के कारण डीहाइड्रेशन की समस्या हो जाती है। गर्मियों में लगातार एसी में रहने से भी कम पानी पी पाते हैं। इससे भी डीहाइड्रेशन की समस्या हो सकती है।

स्किन एलर्जी

सूर्य के प्रकाश, कीड़ों के काटने, पसीने और अत्यधिक गर्मी के कारण स्किन एलर्जी या रैशेज हो सकते हैं। यह समस्या तब और बढ़ जाती है, जब पहले से ही त्वचा से संबंधित कोई समस्या या स्किन एलर्जी हो। गर्मियों में त्वचा के सूखने के कारण भी रैशेज पड़ने की आशंका बढ़ जाती है।

माइग्रेन

गर्मियों में कई लोगों में माइग्रेन अटैक की आशंका बढ़ जाती है। लगातार तेज धूप और गर्मी के कारण सिरदर्द और चक्कर आने की समस्या होने से भी माइग्रेन अटैक ट्रिगर हो सकता है। गर्मियों में डीहाइड्रेशन की आशंका काफी बढ़ जाती है। कई लोगों में डीहाइड्रेशन माइग्रेन का सबसे बड़ा ट्रिगर है। माइग्रेन के रोगी रोशनी के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। गर्मियों में सूर्य पूरी तेजी से चमकता है, जिससे कई लोगों में माइग्रेन का दर्द शुरू हो जाता है।

घमौरियां

इसे प्रिक्ली हीट या स्वेट रैश भी कहते हैं। यह स्थिति तब होती है, जब किसी व्यक्ति को सामान्य सेअधिक पसीना आता है और उसकी स्वेट ग्लैंड ब्लॉक हो जाती है। स्वेट ग्लैंड के ब्लॉक होने से जो पसीना उत्पन्न होता है, वह वाष्पीकृत होने के लिए त्वचा की सतह पर नहीं आ पाता। इसके कारण सूजन हो जाती है और त्वचा पर रैशेज पड़ जाते हैं। इससे त्वचा पर छोटे-छोटे फफोले दिखाई देते हैं।

सिरदर्द

गर्मियों में दिन लम्बे और रातें छोटी होने से स्लीप पैटर्न बिगड़ जाता है। इससे भी सिरदर्द हो सकता है। लगातार तेज धूप और गर्मी में रहने से मस्तिष्क में ऑक्सीजन का स्तर प्रभावित होता है। इससे सिरदर्द और चक्कर आते हैं।

सन स्ट्रोक

गर्मियों में तापमान बढ़ने से सन स्ट्रोक की आशंका काफी बढ़ जाती है। सन स्ट्रोक की चिकित्सीय परिभाषा के अनुसार सामान्यतया हमारे शरीर का तापमान 90-94 डिग्री फारेनाइट के बीच रहता है, लेकिन जब यह 105 डिग्री फारेनहाइट से अधिक हो जाता है तो चक्कर आने से लेकर कोमा जितने गंभीर लक्षण दिखाई दे सकते हैं। इससे किडनी और हार्ट फेलियर भी हो सकता है।

ऐसे करें बचाव

- दोपहर में 10 से 4 के बीच में बाहर निकलने से बचें।
- सनस्क्रीन का उपयोग करें। 30 या इससे अधिक एसपीएफ वाला सनस्क्रीन ही इस्तेमाल में लाएं।
- वेंटिलेशन के लिए रात में खिड़कियां खोलकर सोएं, लेकिन खिड़कियों की जालियां लगाए रखें।
- प्यास लगने का इंतजार न करें और थोड़ी-थोड़ी देर में पानी पीते रहें। जरूरी मात्रा से थोड़ा अधिक ही पानी पीएं।
- सूर्य की सीधी किरणों के सम्पर्क में आने से बचें। जब भी धूप में जाएं, छाते का इस्तेमाल जरूर करें।
- एसी से तुरंत गर्म वातावरण में न जाएं, ना ही गर्म वातावरण से तुरंत एसी में जाएं।
- घमौरियों को रोकने के लिए उस स्थान पर जाने से बचें, जहां अत्यधिक पसीना आने की आशंका हो। ऐसी जगहों में गर्म और आर्द्र वातावरण वाली जगह हो सकती है।
- गर्मियों में पंखे, कूलर या एसी का उपयोग करें। संभव हो तो सुबह और शाम दोनों ही समय ठंडे पानी से नहाएं।
- त्वचा को सूखा और ठंडा रखें।
- अगर आप घर से बाहर निकल रहे हैं तो जितना हो सके छाया में रहें।
- ढीले सूती कपड़े पहनें। पोलिस्टर और नायलॉन जैसे सिंथेटिक कपड़े पहनने से बचें। ये उष्मा को रोक लेते हैं।
- **खूब पानी पीएं:** हल्के और संतुलित भोजन का समय पर सेवन करें।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

डॉ. महावीर सिंह परिहार
एम.एस. (आर्थो)
अस्थि रोग विशेषज्ञ
मो. 94141 62139

SHRC

डॉ. श्रीमती सुमन परिहार
एम.एस. (सर्जरी)
महिला शल्य चिकित्सक
मो. 98297 91760

श्रीनाथ हॉस्पीटल एण्ड रिसर्च सेन्टर

उपलब्ध सुविधाएं

- आर्म (टेलिविजन) द्वारा आधुनिकतम तरीके से हड्डी के फ्रेक्चर की ऑपरेशन सुविधा।
- स्तन सम्बन्धी रोगों (गाठ, केंसर) का इलाज व निदान।
- एपेन्डिक्स, हर्निया एवं पथरी, बच्चेदानी का ऑपरेशन।
- हड्डी के सभी प्रकार के आधुनिक ऑपरेशन।
- नेलिंग-प्लेटिंग, प्रोस्थेसिस इत्यादि।
- जन्मजात विकलांगता एवं पोलियो के ऑपरेशन।
- प्लास्टर
- एक्स-रे

ऑपरेशन एवं भर्ती की सुविधा उपलब्ध

3-नवरत्न कॉम्पलेक्स, महावीर कॉलोनी पार्क,
80 फीट रोड, एवरेस्ट, आशियान के सामने, उदयपुर

प्रत्यूष

10 मईः परम पुण्यमयी अक्षय तृतीया

महर्षि परशुराम का प्राकट्य

नंदकिशोर शर्मा

अक्षय तृतीया महापर्व का न केवल सनातन परम्परा में बल्कि जैन परम्परा भी विशेष महत्व है। इसका लौकिक और लोकोत्तर दोनों ही दृष्टियों से महत्व है। यह दिन किसानों, कुंभकारों और शिल्पकारों के लिए भी बहुत महत्व का है। यह दिन अनबुझा शुभ मुहूर्त भी है, बिना किसी मुहूर्त शादियां होती हैं। प्राचीन समय में परम्परा थी कि इस दिन राजा देश के विशिष्ट किसानों को राज दरबार में आमंत्रित करता था और उन्हें अगले वर्ष बुवाई के लिए विशेष प्रकार के बीज उपहार में देता था। जैन धर्म में वैशाख शुक्ला तृतीया का दिन भगवान ऋषभ के जीवन का महत्वपूर्ण पृष्ठ है। सतयुग और त्रेता के संधिकाल में वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को पुनर्वसु नक्षत्र व प्रदोष काल में महान शिव भक्त भृगुकुल शिरोमणि महर्षि परशुराम जी का अवतरण हुआ था। समाज को शास्त्र और शस्त्र के समन्वय का अनूठा सूत्र देने वाले भगवान परशुराम ऋषियों के ओज और क्षत्रियों के तेज दोनों का अद्भुत संगम माने जाते हैं। कारण कि उनके माता-पिता दोनों ही विलक्षण सिद्धियों से संपन्न थे। जहां उनके ब्राह्मण पिता जमदग्नि को अग्नि तत्व पर नियंत्रण पाने की सिद्धि हासिल थी, वहीं क्षत्रिय कुल में जन्मी मां रेणुका को जलतत्व पर नियंत्रण का वरदान महर्षि अगत्स्य से मिला था। मां-पिता के इन दिव्य गुणों के साथ जन्मे परशुराम जी का प्रारंभिक नाम राम था, जो कालांतर में महादेव से परशु प्राप्त होने के बाद परशुराम हो गया। परशुराम जी की गणना महान पितृभक्तों में होती है। उनका समूचा जीवन अनुपम प्रेरणाओं व उपलब्धियों से भरा है। वे न सिर्फ समस्त दिव्यास्त्रों के संचालन में पारंगत थे, बल्कि योग, वेद, नीति तथा तंत्र कर्म में भी निष्णात थे। अपने समय के शस्त्र विद्या के महानतम गुरु परशुराम ने ही द्वापर युग में भीष्म, द्रोणाचार्य व कर्ण को भी युद्धविद्या का महारथी बनाया था, प्राचीन भारतीय मार्शल आर्ट कलरीपायट्टु व वदक्कन कलारी के जनक भी वे ही माने जाते हैं। यहीं नहीं, जैसे देवनदी गंगा को धरती पर लाने का श्रेय राजा भागीरथ को जाता है, वैसे ही ब्रह्मपुत्र जैसे उग्र महानद को धरती लाने का श्रेय परशुराम जी को जाता है। पौराणिक उद्धरणों के अनुसार केरल, कन्याकुमारी व रामेश्वरम जैसे दिव्य तीर्थों की स्थापना भगवान परशुराम ने ही की थी। कहा जाता है कि उन दिनों राजमद में मदांध महिष्मती के हैहयवंशीय क्षत्रिय शासक कार्तवीय सहस्त्रार्जुन के क्रूर अत्याचारों से चारों और त्राहि-त्राहि मची हुई थी। शक्ति के मद में चूर सहस्रार्जुन एक दिन ऋषि जमदग्नि के आश्रम में जा पहुंचा। ऋषि ने गोमाता कामधेनु की कृपा से अपने राजा का सेना समेत भव्य स्वागत किया। यह देख कार्तवीर्य ललचा गया और कामधेनु मांग बैठा। ऋषि जमदग्नि के इनकार से कार्तवीर्य ने क्रोध में भरकर आश्रम पूरी तरह नष्ट-भ्रष्ट कर दिया तथा जमदग्नि को भी मार डाला। जब इसका पता परशुराम जी को चला तो उनके क्रोध की सीमा न रही। उन्होंने समूची पृथ्वी से क्षत्रिय राजाओं के संहार की शपथ ली और महिष्मती पर धावा बोलकर अपने परशु से कार्तवीर्य सहस्रार्जुन को उनके समूचे कुल समेत मृत्युलोक पहुंचा दिया। अक्षय तृतीया को जन्म लेने के कारण उनकी शस्त्र शक्ति भी अक्षय थी और शास्त्र-सम्पदा भी। उनका परशु अपरिमित शस्त्र-शक्ति का प्रतीक था जो उनको भगवान शंकर ने शस्त्र विद्या की परीक्षा में सफल होने पर पारितोषिक रूप में प्रदान किया था, जहां राम मर्यादा व लोकनिष्ठा का पर्याय माने जाते हैं, वहीं परशुराम

क्या करें इस दिन?

- इस दिन समुद्र या गंगा स्नान करना चाहिए
- प्रातः पंखा, चावल, नमक, घी, शक्कर, साग, इमली, फल तथा वस्त्र का दान करके ब्राह्मणों को दक्षिणा भी देनी चाहिए।
- ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।
- इस दिन सत्तू अवश्य खाना चाहिए।
- नवीन वस्त्र, शस्त्र, आभूषादि बनवाना या धारण करना चाहिए।
- नवीन स्थान, संस्था, समाज आदि की स्थापना या उद्घाटन करना भी शुभ होता है।

शास्त्रों में अक्षय तृतीया

- इस दिन से सतयुग और त्रेता युग का आरंभ माना जाता है।
- इसी दिन श्री बद्रीनारायण के पट खुलते है।
- श्री परशुरामजी का अवतरण भी इसी दिन हुआ था।
- हयग्रीव का अवतार भी इसी दिन हुआ था।
- वृंदावन के श्री बांकेबिहारीजी के मंदिर में केवल इसी दिन श्रीविग्रह के चरण दर्शन होते हैं अन्यथा पूरे वर्ष वस्त्रों से ढंके रहते हैं।

जैन धर्म में अक्षय तृतीया

जैन धर्मावलम्बियों का महान धार्मिक पर्व और इस दिन जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान ने एक वर्ष की पूर्ण तपस्या करने के पश्चात इक्षु (शोरडी-गन्ने) रस से पारायण किया था। श्री आदिनाथ भगवान ने सत्य व अहिंसा का प्रचार करने एवं अपने कर्म बंधनों को तोड़ने के लिए संसार के भौतिक एवं पारिवारिक सुखों का त्याग कर जैन वैराग्य अंगीकार कर लिया। सत्य और अहिंसा के प्रचार करते-करते आदिनाथ प्रभु हस्तिनापुर गजपुर पधारे, जहां इनके पौत्र सोमयश का शासन था। प्रभु का आगमन सुनकर सम्पूर्ण नगर दर्शनार्थ उमड़ पड़ा। सोमप्रभु के पुत्र राजकुमार श्रेयांस कुमार ने प्रभु को देखकर उन्हें पहचान लिया और तत्काल शुद्ध आहार के रूप में प्रभु को गन्ने का रस दिया, जिससे आदिनाथ ने व्रत का पारायण किया। गन्ने के रस को इक्षुरस कहते है इस कारण यह दिन इक्षु तृतीया एवं अक्षय तृतीया के नाम से विख्यात हो गया।

अनीति विमोचक शस्त्रधारी।

पर्व का महत्व

- जो मनुष्य इस दिन गंगा स्नान करता है, उसे पापों से मुक्ति मिलती है।
- इस दिन परशुरामजी की पूजा करके उन्हें अर्ध्य देने का बड़ा महात्म्य माना गया है।
- शुभ व पूजनीय कार्य इस दिन होते हैं, जिनसे प्राणियों मनुष्यों का जीवन धन्य हो जाता है।
- श्री कृष्ण ने भी कहा है कि यह तिथि परम पुण्यमय है। अक्षय तृतीया को अनंत, अक्षय, अक्षुण्ण फलदायक कहा जाता है। जो कभी क्षय नहीं होता वहीं अक्षय है। कहते हैं कि इस दिन जिसका परिणय संस्कार होता है, उनका सौभाग्य अखंड रहता है। इस दिन महालक्ष्मी की प्रसन्नता के लिए भी विशेष अनुष्ठान होता है जिससे अक्षय पुण्य मिलता है।

Dharmendra
Director,
+91 94141 58708

श्री JL Distributors

Tarun
Director,
+91 810 444 1444

श्री Jagat Leela Distributors

Tarun Electricals

Stockist

USHA Symphony Crompton Kunstocom Giving shape to ideas
Racold HAVELLS PHILIPS OSRAM

Off.: 30/31, Link Road, Opp. Town Hall, Udaipur 313 001 (Raj.)
Ph.: 0294-2423965 (O), E-mail: jagatleela@gmail.com, tarunelectric@yahoo.in

प्रत्यूष

पति-पत्नी के अंतर्द्वंद्व की अभिव्यक्ति

'रहोगी तुम वही'

मौलिक ऑर्गनाइजेशन ऑफ क्रियेटिव एंड परफोर्मिंग आर्ट और यूजीसी महिला अध्ययन केंद्र, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में विश्व रंगमंच दिवस पर (28 मार्च)पं. दीनदयाल उपाध्याय सभागार में लघु नाटक 'रहोगी तुम वही' के मंचन ने दर्शकों का मन मोह लिया। नाटक में दिखाया गया कि समाज में महिलाओं पर पारिवारिक द्वंद्व आज भी हावी है।

'रहोगी तुम वही' में इसी द्वंद्व को भारतीय पुरुष के नज़रिए से अभिव्यक्ति दी गई है। नाटक में पुरुष के दोहरे चरित्र और दोगले सिद्धान्तों को सीधी-सादी भाषा में किसी भी घर में होने वाले संवाद व स्थितियों के माध्यम से उजागर किया गया।

'रहोगी तुम वही' में पति का एकालाप, ज़ाहिर तौर पर पत्नी से मुख़ातिब है। पति के पास, पत्नी से शिक़ायतों का अन्तहीन भंडार है, जिन्हें वह मुखर हो कर पत्नी पर उडेल रहा है। सब रोज़मर्रा की आम बातें हैं। उसे पत्नी के हर रूप से शिक़ायत है; और ये रूप अनेक हैं। वह उन्हें स्वीकारना नहीं चाहता; इसलिए कहे चले जा रहा है कि रहोगी तुम वही, यानी हर हाल, मेरे अयोग्य। निहितार्थ, न मैं बदल सकता हूँ, न तुम्हारे बदलते स्वरूप को सहन कर सकता हूँ, इसलिए रहोगी तुम वही, मुझ से पृथक। पत्नी के पास कहने को बहुत कुछ है पर लेखक को उससे कुछ कहलाने की ज़रूरत नहीं है; अनकहा ज़्यादा मारक ढंग से दर्शकों तक पहुँचता है।

नाटक का मुख्य आकर्षण मौलिक संस्था के युवा रंगकर्मी जतिन भारवानी का जीवंत अभिनय रहा। ऐसे पति की भूमिका जो हमेशा अपनी पत्नी की कमियाँ ढूँढ़ कर उसे प्रताड़ित करता रहता है, के चरित्र को जतिन ने बखूबी निभाया। नाटक के निर्देशक शिवराज सोनवाल की परिकल्पना और निर्देशन ने सूझ-बूझ व रंगमंचीय कौशलता के साथ नाटक के संवाद को उसकी अस्मिता और मूल संवेदनाओं को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया।

उपस्थित दर्शकों ने अभिनय, निर्देशन और नाटक के माध्यम से दिए गए संदेश की सराहना कर कलाकारों को भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं। महेश आमेटा ने रंगमंच दिवस के बारे में जानकारी दीं। महिला अध्ययन केंद्र की डॉ. गरिमा मिश्रा ने प्रतिभागियों, अतिथियों एवम् दर्शकों का धन्यवाद ज्ञापित कर कार्यक्रम के समापन की घोषणा की। संगीत संचालन-रेणुका जाजोट, मंच सज्जा-तमन्ना गोयल, निर्माण प्रबंधक- शिबली ख़ान, रूप सज्जा- गुनीशा मकोल, मंच सामग्री-कुलदीप, कॉस्टयूम- तन्वी बिजारनिया, कैमरा एवं वीडियोग्राफी का दायित्व शुभम् शर्मा ने संभाला। सभी कलाकारों का योगदान अपने-अपने दायरे में अत्यंत प्रभावी रहा।

-जसबीर सिंह

गीत

मैं गांव-गांव का शिल्पकार

वेदव्यास

मैं गांव-गांव का शिल्पकार
मानव सपनों का सूत्रधार
मैं करने आया आज सभी का
खुशियों से अभिसार....
मेरे गीतों में गौरव है
मेहनत की मीठी भाषा का
मेरे रंगों में अंकित है
सूरज बहुरंगी आशा का
मैं देश प्रेम का पंथकार
मैं गांव-गांव का शिल्पकार...

मेरे निश्चय में साहस है
मिल-जुलकर कदम बढ़ाने का
मेरे जीवन में लिखा हुआ
इतिहास विजय बलिदानों का
मैं जन जीवन का चित्रकार
मैं गांव-गांव का शिल्पकार...
मेरे सपनों में अर्चन है
संस्कृति के नये विचारों का
भारत माता के चरणों में
अर्पित सुख चांद सितारों का

मैं लोकराज का अर्थकार
मैं गांव-गांव का शिल्पकार...
मेरे आंगन में आभा है
श्रम के नूतन अभियानों की
मेरे सर्जन में महक रही
सुधियां भावुक अरमानों की
मैं भारत का निर्माणकार
मानव सपनों का सूत्रधार
मैं गांव-गांव का शिल्पकार...

प्रोपराईटर : पंडित लक्ष्मीनारायण गौड़

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

भारत टेंकर ट्रांसपोर्ट कम्पनी

पण्डित एण्ड संस कोन्ट्रेक्टर्स

सभी प्रकार के एसिड व केमीकल के ट्रांसपोर्टेशन का कार्य टेंकरों द्वारा समस्त भारत में करते हैं।
भारी मशीनरी व एक्सीडेन्टल गाड़ियों को उठाने के लिये क्रेनें हर समय उपलब्ध रहती हैं।
हैवी अर्थमूविंग मशीनें (टाटा-हिटाची, एल. एण्ड टी.-सी.के.-90, पोकलेन, डोजर, डम्पर) किराये पर उपलब्ध हैं।

35—ए, सेन्ट्रल एरिया, आवरी माता मंदिर के सामने, उदयपुर (राज.)
दूरभाष : 2584501, 2583334 (ऑ.) 2584502 (नि.) केबल : पंडित जी

ब्रांच : बडौदा, वापी, अंकलेश्वर

प्रत्यूष

राजस्थान की सियासत में महिलाओं को उचित प्रतिनिधित्व कब ?

2024 के लोकसभा चुनावों के लिए मतदान हो रहा है। राजस्थान में चुनाव दो चरणों 19 व 26 अप्रैल 2024 को सम्पन्न चुके हैं। दोनों की प्रमुख दलों भाजपा व कांग्रेस ने सभी 25 लोकसभा सीटों पर अपने-अपने प्रत्याशी तय कर दिए हैं। इस बार भाजपा ने 5 सीटों पर तो कांग्रेस ने 3 सीटों पर महिला प्रत्याशियों को टिकट दिए हैं। भाजपा और कांग्रेस ने महिला वोट बैंक के चलते महिलाओं को सियासत में आरक्षण देने के मुद्दे को खूब उछाला। लेकिन बात जब महिलाओं को टिकट देने की आई है तो तमाम दावे और वादे धराशायी हो गए। हालांकि दोनों सदनों में महिला आरक्षण विधेयक पारित हो चुका है और 2029 लोकसभा चुनाव से यह लागू भी हो जाएगा, लेकिन हकीकत में अगर सियासी दल महिलाओं को प्रतिनिधत्व देने को लेकर गंभीर होते तो 2024 के लोकसभा चुनाव में अपने स्तर पर राजस्थान में महिलाओं को ज्यादा टिकटें देकर नजीर पेश कर सकते थे। लेकिन लगता है कि एक बार फिर राजस्थान महिलाओं को सियासी प्रतिनिधित्व देने की दिशा में पिछड़ गया है।

राजस्थान से लोकसभा चुनावों में पहुंचीं महिलाओं की भागीदारी पर नजर डालें तो वर्ष 1952 से 2019 तक 201 महिलाएं चुनावी मैदान में उतरीं। इनमें से 19 महिलाएं ही लोकसभा में पहुंच पाई हैं। वसुंधरा राजे अब तक इनमें से सबसे ज्यादा पांच बार लोकसभा में प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं। पूर्व केंद्रीय मंत्री गिरिजा व्यास चार बार और जसकौर मीणा, निर्मला कुमारी व उषा मीणा दो-दो बार सांसद चुनी गई।

राज्य निर्वाचन आयोग के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 1952 के लोकसभा चुनाव में 2 महिला प्रत्याशी चुनाव में उतरीं, लेकिन जीत एक को भी नहीं मिली। शारदा बाई ने भरतपुर-सवाईमाधोपुर और रानी देवी भार्गव ने सिरोही-पाली सीट से नामांकन दाखिल किया लेकिन दोनों महिलाओं की जमानत जब्त हो गई। 1957 के चुनाव में एक भी महिला चुनाव मैदान में नहीं उतरीं।

बाबूलाल नागा

वर्ष 1962 में हुए तीसरे आम चुनाव में छह महिलाएं मैदान में उतरीं और जयपुर राजपरिवार की गायत्री देवी ने लोकसभा में पहली बार राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने भी एक महिला प्रत्याशी शारदा देवी, जो कि कांग्रेस से थीं, को डेढ़ लाख मतों से पराजित कर यह गौरव प्राप्त किया था। जयपुर लोकसभा सीट से लड़ते हुए कुल 2 लाख 46 हजार 516 मतों में से एक लाख 92 हजार नौ सौ नौ मत प्राप्त कर उन्होंने एक रिकॉर्ड कायम किया था, बाद में उनका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया। राजस्थान की पहली महिला सांसद पूर्व राजमाता गायत्री देवी, स्वतंत्र पार्टी से थीं। यह पार्टी राजा-महाराजाओं की पार्टी मानी जाती थी और गायत्री देवी ने एक बार नहीं बल्कि लगातार तीन बार 1962, 1967 व 1971 में लोकसभा में जयपुर का प्रतिनिधित्व किया। 1971 में 4 महिलाओं ने चुनाव लड़ा। दो जीत गईं और दो हार गईं। राजस्थान से पहली बार 2 महिलाएं सांसद पहुंचीं। गायत्री देवी के साथ जोधपुर सीट सये निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में पूर्व राजमाता कृष्णा कुमारी ने राजस्थान से दूसरी महिला सदस्य के रूप में लोकसभा में प्रतिनिधित्व किया। 1980 के चुनाव में पहली बार कांग्रेस ने निर्मला कुमारी शक्तावत को चित्तौडगढ़ से टिकट दिया और वे सांसद चुनी गईं। इसी चुनाव में पहली बार जनजाति क्षेत्रों के लिए आरक्षित दो सीटों पर भी महिलाओं ने चुनाव लड़ा। हालांकि एक की जमानत जब्त हो गई और दूसरी पांचवें स्थान पर रहीं। 1984 के लोकसभा चुनाव में उदयपुर लोकसभा से कांग्रेस की इंदुबाला सुखाड़िया और कांग्रेस की निर्मला कुमारी ने चित्तौड़गढ़ से जीत हासिल की।

1989 में भारतीय जनता पार्टी की प्रत्याशी वसुंधरा राजे ने झालावाड़ सीट से जीत हासिल कर एक मात्र महिला के रूप में लोकसभा में राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया। इस चुनाव में कांग्रेस ने तीन महिलाओं को टिकट दिए। एक टिकट जनता दल ने भी दिया। कांग्रेस की तीनों प्रत्याशी चुनाव हार गईं। 1991 में 14 महिलाएं लोकसभा में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुनाव मैदान में उतरीं लेकिन केवल 4 महिला भाजपा की महेंद्र कुमारी अलवर से, कृष्णेंद्र कौर भरतपुर से व वसुंधरा राजे झालावाड़ से तथा कांग्रेस की डॉ गिरिजा व्यास उदयपुर से चुनी गईं।

चुनाव में औसतन 5 से 6 महिलाएं चुनाव मैदान में उतर रही थीं लेकिन 1991 के बाद इसमें तेजी आई और चुनाव मैदान में उतरने वाली महिलाओं की संख्या 20 से 25 तक हो गई। आंकड़ों के अनुसार 1996 के लोकसभा चुनावों में राजस्थान से लोकसभा में प्रतिनिधित्व करने वाली महिलाओं की संख्या में वृद्धि हुई और 25 महिलाओं ने नामांकन भरा। इनमें केवल 4 महिला भरतपुर से भाजपा की महारानी दिव्यासिंह, सवाईमाधोपुर से कांग्रेस की उषा मीणा, झालावाड़ से भाजपा की वसुंधरा राजे और उदयपुर से कांग्रेस की गिरिजा व्यास ने जीत हासिल की। 1998 में 20 महिला प्रत्याशी चुनावी मैदान में उतरीं। इनमें से 3 महिलाएं कांग्रेस की उषा मीणा सवाईमाधोपुर से, प्रभा ठाकुर अजमेर से और भाजपा की वसुंधरा राजे झालावाड़ से जीतीं। वर्ष 1999 में 15 महिलाएं चुनाव में खड़ी हुईं पर 3 महिलाएं सांसद चुनी गईं। इनमें कांग्रेस से गिरिजा व्यास व भाजपा से वसुंधरा राजे, जसकौर मीणा चुनी गईं। इस वर्ष भाजपा ने 2 जबकि कांग्रेस ने 4 महिलाओं गिरिजा व्यास-उदयपुर, प्रभा ठाकुर-अजमेर, महेंद्र कुमारी-अलवर व उषा मीणा-सवाईमाधोपुर से टिकट दिया था। वर्ष 2004 के लोकसभा चुनाव में राजस्थान से 17 महिलाएं खड़ी हुईं। पर 2 महिलाएं सांसद चुनी गईं। इस वर्ष भाजपा ने 4 महिला प्रत्याशियों संतोष अहलावत-झुंझुनूं, जसकौर मीणा-सवाई माधोपुर, किरण माहेश्वरी - उदयपुर व बी. सुशीला-अजमेर को टिकट दिया। इनमें किरण माहेश्वरी व बी. सुशीला की जीत हुई। कांग्रेस ने एकमात्र महिला गिरिजा व्यास को उदयपुर से टिकट दिया था लेकिन उनकी हार हुई।

वर्ष 2009 में राजस्थान से सबसे ज्यादा 31 महिला प्रत्याशियों ने भाग्य आजमाया। इस वर्ष लोकसभा के लिए राजस्थान से 3 महिला सांसद चुनी गईं। ये तीनों महिला सांसद कांग्रेस पार्टी से थीं। कांग्रेस ने 5 महिलाओं ज्योति मिर्धा-नागौर, चन्द्रेश कुमारी-जोधपुर, संध्या चौधरी- जालौर, गिरिजा व्यास-चित्तौड़गढ़ व उर्मिला जैन भाया-झालावाड़-बारां से टिकट दिया। इनमें से 3 महिलाएं ज्योति मिर्धा, चन्द्रेश कुमारी व गिरिजा व्यास जीतकर सांसद चुनी गईं। इस वर्ष भाजपा ने 3 महिलाओं डॉ. किरण यादव-अलवर, किरण माहेश्वरी -अजमेर व बिंदु चौधरी- नागौर से टिकट दिया। पर तीनों की ही हार हुईं। साल 2014 के लोकसभा चुनाव में राजस्थान से 27 महिला प्रत्याशियों में से एक मात्र महिला सांसद बीजेपी की संतोष अहलावत चुनी गई थीं। इस साल कांग्रेस ने प्रदेश की 25 में से 6 सीटों पर महिलाओं को टिकट दिया। इनमें राजबाला ओला-झुंझुनूं, डॉ. ज्योति मिर्धा-नागौर, मुन्नी देवी गोदारा-पाली, चन्द्रेश कुमारी-जोधपुर, रेशम मालवीया-बांसवाड़ा व गिरिजा व्यास-चित्तौड़गढ़ से महिला प्रत्याशी थीं जबकि बीजेपी ने सिर्फ एक महिला उम्मीदवार संतोष अहलावत को टिकट दिया और उनकी जीत हुई। वर्ष 2019 में राजस्थान से 21 महिला प्रत्याशियों ने दावेदारी ठोकी पर 3 महिलाएं ही सांसद चुनी गईं। इस साल भारतीय जनता पार्टी ने 25 में से 3 महिलाओं को टिकट दिया था और तीनों ही जीत कर संसद पहुंचीं। इनमें राजसमंद से दीया कुमारी, दौसा से जसकौर मीणा और भरतपुर से रंजीता कोली हैं। जबकि कांग्रेस ने 4 महिलाओं कृष्णा पूनिया-जयपुर ग्रामीण, ज्योति खंडेलवाल-जयपुर शहर, सविता मीणा-दौसा व ज्योति मिर्धा-नागौर को टिकट दिया था। वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव रण में भाजपा ने 25 में से 5 सीटों पर ज्योति मिर्धा-नागौर, मंजू शर्मा जयपुर शहर, महिमा सिंह-राजसमंद, प्रियंका बैलान-गंगानगर और इंदु देवी जाटव-करौली-धौलपुर को मैदान में उतारा। कांग्रेस की ओर से 3 महिला उम्मीदवार संजना जाटव-भरतपुर, उर्मिला जैन भाया-झालावाड़-बारां, और संगीता बेनीवाल-पाली मैदान में हैं। खास बात यह है कि जिन आठ सीटों पर भाजपा या कांग्रेस ने महिला उम्मीदवार उतारे हैं, उनमें से किसी भी सीट पर महिलाएं आमने-सामने नहीं थी। इन आठों सीटों पर उनका मुकाबला प्रतिद्वंद्वी पार्टी के पुरुष प्रत्याशी से रहा।

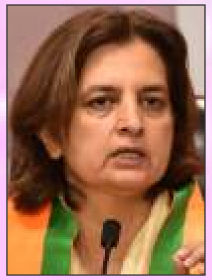

राजस्थान में कांग्रेस और भाजपा दो ही प्रमुख दल हैं। और दोनों दलों का महिला उम्मीदवारी के संदर्भ में इतिहास बहुत उत्साहजनक नहीं है। कांग्रेस हालांकि पहले लोकसभा चुनाव से ही मैदान में रही है लेकिन राजस्थान में उसने 1980 में पहली बार महिला प्रत्याशी निर्मला कुमारी को टिकट दिया। वहीं भाजपा का तो जन्म ही 1980 में हुआ और इसने 1984 में ही दो महिलाओं को टिकट दे दिया था। हालांकि दोनों ही पार्टियां हर लोकसभा चुनाव में 25 सीटों पर सिर्फ दो या तीन-तीन महिलाओं को ही टिकट देते आए हैं। अब तक भाजपा ने 27 महिला प्रत्याशियों को और कांग्रेस ने 34 टिकट दिए हैं। ऐसे में हर चुनाव में महज गिनती की सांसद चुनकर लोकसभा पहुंचीं।

बहरहाल, नारी सशक्तिकरण के दावे भले ही किए जा रहे हैं, लेकिन चुनावी मैदान में महिलाओं को पूरा हक नहीं मिला है। महिलाओं को अधिक प्रतिनिधित्व देने की बात कहकर तालियां बटोरने वाले राजनीतिक दल टिकट बांटने के समय अपनी बात पर कायम नहीं रह पाते।

(लेखक भारत अपडेट के संपादक व स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

आनंद वृद्धाश्रम स्थापना दिवस : बुजुर्ग अनुभव का खजाना: कोविंद

उदयपुर। तारा संस्थान द्वारा संचालित द्रोपदी देवी आनंद वृद्धाश्रम के 13वें स्थापना दिवस पर गत दिनों आयोजित समारोह में बतौर मुख्य अतिथि पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा कि बुजुर्ग अनुभव का खजाना हैं। हर काल और समय में उनकी उपयोगिता सार्थक होती है। शूरवीर महाराणा प्रताप, भक्तिमति मीरा बाई, स्वामी भक्त पन्नाधाय, दानवीर भामाशाह आदि विभूतियों को नमन करते हुए उन्होंने कहा कि मेवाड़ अपनी संस्कृति और सभ्यता को लेकर दुनियाभर में विख्यात है। उन्होंने पारिवारिक विघटन की बढ़ती प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त करते हुए माता-पिता और बुजुर्गों के सम्मान पर ध्यान केन्द्रित करने का आह्वान किया। आरंभ में संस्थान की अध्यक्ष कल्पना गोयल व सीईओ दीपेश मित्तल, निदेशक विजय चौहान, अलका जैन सहित संस्थान के पदाधिकारियों तथा वृद्धाश्रम आवासियों ने राष्ट्रपति का गर्मजोशी से स्वागत किया, नारायण सेवा संस्थान के चेयरमैन कैलाश 'मानव' ने भी कोविंद से भेंट की। पूर्व राष्ट्रपति ने वृद्धाश्रम के प्रत्येक आवासी से भेंट कर उन्हें यहां मिल रही सुविधाओं की जानकारी ली।

उदयपुर सीमेंट की आधुनिक मिल का शुभारंभ

उदयपुर। जेके लक्ष्मी सीमेंट की सहायक कम्पनी उदयपुर सीमेंट वर्क्स के डबोक प्लांट में अत्याधुनिक सीमेंट मिल का शुभारंभ गत दिनों हुआ। प्लांट में नई मिल की शुरुआत होने के साथ मौजूद उत्पादन क्षमता 2.2 मिलियन मीट्रिक टन से बढ़कर 4.7 टन हो जाएगी। पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए भी इसमें नवीन उपायों को शामिल किया गया है। उदयपुर सीमेंट वर्क्स लिमिटेड के डायरेक्टर और सीईओ श्रीवत्स सिंघानिया ने कहा कि सीमेंट मिल का उद्घाटन एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। कंपनी अत्याधुनिक तकनीक और सस्टेनेबल प्रक्रिया का लाभ उठाने के लिए प्रतिबद्ध है। हमारा लक्ष्य लागत को कम करते हुए असाधारण उत्पाद वितरित करना है।

ऋषभ मेटल्स की नई शाखा का उद्घाटन

उदयपुर। ऋषभ मेटल्स, जोधपुर की उदयपुर शाखा के दुर्गानर्सरी रोड स्थित कार्यालय का गत दिनों निवृत्ति कुमारी मेवाड़ व जनार्दन राय नागर विवि के कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने उद्घाटन किया। कम्पनी के निदेशक रोहित जैन ने बताया कि इस शाखा के खुलने से अब कॉरपोरेट्स, होटल्स में किफायती दामों पर इस प्रकार के कीचन इंस्टॉल हो सकेंगे। स्पर्श जैन ने बताया कि निर्मित उत्पादों की बेहतर उत्पादकता और गुणवत्ता के लिए ऋषभ मेटल्स की कारीगरी पूरी तरह से उन्नत उपकरणों और मशीनरी से सुसज्जित है।

हीरो की एक्स्ट्रीम 125 आर व मेवरिक 440 की लॉचिंग

उदयपुर। हीरा मोटर्स ने अरबन स्क्वायर मॉल में दो अत्याधुनिक बाइक्स एक्स्ट्रीम 125 आर और मेवरिक 440 की लॉचिंग की। डीलर्स ने एक्स्ट्रीम 125 आर और मेवरिक 440 का अनावरण किया। रॉयल मोटर्स के डायरेक्टर शेख शब्बीर के. मुस्तफा, वीएसएस हीरो के सतपालसिंह ने बताया कि एक्स्ट्रीम 160 आर का पहले से युवाओं में विशेष रूझान था और उनकी 125 सीसी की डिमांड का ध्यान रखते हुए हीरो मोटोकॉर्प की ओर से एक्स्ट्रीम का 125 वेरिएंट बाजार में लाया गया है। हीरो मोटो कॉर्प के एरिया सेल्स मैनेजर भाविक सरीन, टेरेटरी सेल्स मैनेजर भव्या हसीजा ने बताया कि हीरो मेवरिक 440 बोल्ड और अग्रेसिव डिजाइन, रोडस्टर एस्थेटिक्स और रोबल्स स्टाइलिंग के साथ पेश किया है।

जयदीप स्कूल में रक्तदान शिविर

उदयपुर। जयदीप शिक्षण संस्थान ने स्थापना दिवस पर गत दिनों रक्तदान शिविर का आयोजन किया। इस अवसर पर माता-पिता और कई बाहरी लोग भी थे। विशिष्ट अतिथि उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, सरपंच भुवाणा प्रेम डांगी और उपसरपंच अनिल चित्तौड़ा थे। रक्तदाताओं व अतिथियों का स्वागत संस्थापक डॉ. देवेन्द्र कुमावत, प्रशासक निहारिका कुमावत, विवेक कुमावत ने किया।

डॉ. मंगल पेसिफिक मेडिकल विवि के वाइस चांसलर

उदयपुर। पेसिफिक मेडिकल विश्वविद्यालय में डॉ. एमएम मंगल ने गत दिनों वाइस चांसलर का पदभार ग्रहण किया। इस अवसर पर पीएमसीएच के चेयरमैन राहुल अग्रवाल, सीईओ शरद कोठारी, एडवाइजर टू चेयरमैन डॉ. ए.पी. गुप्ता ने डॉ. मंगल का मेवाड़ी पाग एवं उपरणा पहनाकर सम्मान किया और पदभार ग्रहण कराया।

डॉ. श्रद्धा को राजस्थान कोहिनूर अवार्ड

उदयपुर। मैं भारत हूं फाउंडेशन की ओर से उदयपुर की उद्यमी और मोटिवेटर डॉ. श्रद्धा गट्टानी को मुंबई में राजस्थान कोहिनूर अवार्ड दिया गया। राजस्थान दिवस पर गोरेगांव स्थित फिल्म सिटी के बॉलीवुड पार्क में उन्हें उद्यमिता, प्रेरणा और समाजसेवा क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान पर सम्मानित किया गया।

कुलरिया के साथ फोर्टी चेयरमैन की चर्चा

उदयपुर। नए संसद भवन के निर्माण में अपनी विशेष भूमिका निभाने वाले नरसी ग्रुप के सीएमडी नरसी कुलरिया गत दिनों उदयपुर आए। कुलरिया ने फैडरेशन ऑफ राजस्थान ट्रेड एंड इंडस्ट्री (फोर्टी) ब्रांचेज चेयरमैन प्रवीण सुथार से मादड़ी स्थित उनके कार्यालय में मुलाकात की।

हार्दिक श्रद्धांजलि

चौधरी परिवार के लाडले, समाजसेवी एवं युवा उद्यमी

श्री राहुल जी चौधरी

के 4 अप्रेल 2024 को असामयिक निधन पर

हार्दिक श्रद्धांजलि

आकंठ शोक संतप्त परिवार

आंचल (धर्मपत्नी), स्व. भंवरलाल जी–केसरबाई (दादा–दादी), राजेश–सुमन चौधरी (पिता–माता), नरेश–जयप्रभा (चाचा–चाची), शैफाली–उमेश जी, प्रशाखा–निखिलजी (बहिन–बहनोई), शारदा–दिनेशजी, आशा–स्व. सुरेश जी, रेखा–महेन्द्र जी (भुआ–फूफाजी), रौनक, मुदित, धैर्य, नमन, हेरी, युक्ता एवं चैरी (भाई–बहिन), हृधवीर (भानेज) एवं समस्त चौधरी परिवार

फर्मः शारदा मेडिकल, हॉस्पिटल रोड, उदयपुर

988724220, 9887038818

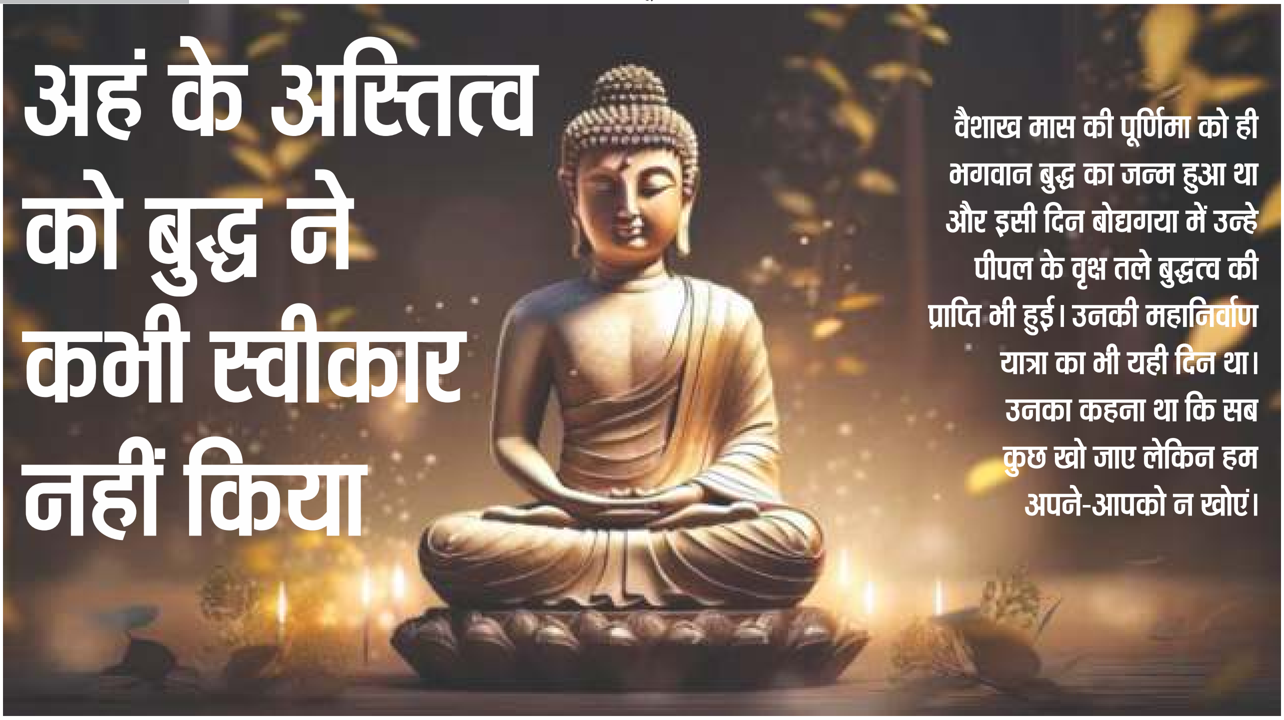

अहं के अस्तित्व को बुद्ध ने कभी स्वीकार नहीं किया

वैशाख मास की पूर्णिमा को ही भगवान बुद्ध का जन्म हुआ था और इसी दिन बोद्यगया में उन्हे पीपल के वृक्ष तले बुद्धत्व की प्राप्ति भी हुई। उनकी महानिर्वाण यात्रा का भी यही दिन था। उनका कहना था कि सब कुछ खो जाए लेकिन हम अपने-आपको न खोएं।

रेणु शर्मा

बुद्ध पूर्णिमा न सिर्फ भारत बल्कि दुनिया के कई अन्य देशों में भी विशेषकर श्रीलंका, कंबोडिया, वियतनाम, चीन, नेपाल थाईलैंड, मलयेशिया, म्यांमार , इंडोनेशिया में हर्षोल्लास से मनाई जाती है। श्रीलंका में इस दिन को वेसाक के नाम से जाना जाता है, जो निश्चित रूप से वैशाख का ही अपभ्रंश है।

वैशाख पूर्णिमा बड़ी ही पवित्र तिथि है। इस दिन दान-पुण्य और धर्म-कर्म के अनेक कार्य किए जाते हैं। यह 'सत्य विनायक पूर्णिमा' भी मानी जाती है। श्रीकृष्ण के बचपन के सहपाठी दरिद्र ब्राह्मण सुदामा जब द्वारिका उनसे मिलने पहुंचे तो श्रीकृष्ण ने उन्हें सत्य विनायक व्रत का विधान बताया। जिसके प्रभाव से सुदामा की सारी दरिद्रता जाती रही तथा वे सुख सम्पन्न और ऐश्वर्यशाली हो गए। इस दिन धर्मराज पूजा का भी विधान है। इस व्रत से धर्मराज प्रसन्न होते हैं और अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता। वैशाख की पूर्णिमा को ही भगवान विष्णु का तेइसवां अवतार भगवान बुद्ध के रूप में हुआ था। इसी दिन उनका निर्वाण भी हुआ था। उनके अनुयायी इस दिवस को बहुत धूम-धाम से मनाते हैं।

बुद्धत्व की प्राप्ति

महात्मा बुद्ध ने सदैव मनुष्य को भविष्य की चिंता से निकलकर वर्तमान में खड़े होने की शिक्षा दी। उन्होंने बताया कि नैतिक आचरण से जिंदगी जिएं, भविष्य के बारे में सोचकर समय बर्बाद ना करें। बिहार के बोधगया में बोधिवृक्ष के नीचे महात्मा बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई। उनके ज्ञान की रोशनी पूरी दुनिया में फैली। महात्मा बुद्ध का एक मूल सवाल है। जीवन का सत्य क्या है भविष्य को हम जानते नहीं है। अतीत पर या तो हम गर्व करते हैं या उसे याद करके पछताते हैं। भविष्य की चिंता में डूबे रहते हैं। दोनों दुखदायी हैं। बुद्ध ने अपरिवर्तनीय अहं के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया, क्योंकि अहं का निवारण सद्विचारों और सत्कमों से किया जा सकता है। हम काल और संसार के अधीन है। इसका कारण है हमारी अविद्या, हमारा अज्ञान, हमारा अजागरण। अविद्या के कारण हममें मूढ़ता, दुर्वृत्ति आती है- हम अज्ञान का 'आसव' पी लेते हैं। अज्ञान और लालसा हमारे आनुभविक जीवन के आधार हैं। अविद्या से हमें विद्या, बोधि, ज्ञान की दशा में ही आना चाहिए। जब हममें

बुद्ध पूर्णिमा का महत्व

बुद्ध पूर्णिमा के दिन गंगा स्नान का भी विशेष महत्व है। मान्यता है कि इस दिन स्नान करने से व्यक्ति के पिछले कई जन्मों के पापों से मुक्ति मिल जाती है। यह स्नान लाभ की दृष्टि से अंतिम पर्व माना जाता है। बुद्ध पूर्णिमा पर बौद्ध मतावलंबी बौद्ध विहारों और मठों में उपासना करते हैं। दीप जलाते हैं।

विष्णु के अवतार

धार्मिक ग्रंथों के अनुसार, महात्मा बुद्ध को भगवान विष्णु का अवतार माना गया है। इस दिन लोग व्रत-उपवास करते हैं। बौद्ध धर्मावलंबी सफेद कपड़े पहनते हैं और बौद्ध विहारों और मठों में सामूहिक उपासना करते हैं। दान देते हैं। यह पर्व बुद्ध के आदर्शों औ धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

'विपासना' (चाक्षुष-ज्ञान या प्रत्यक्ष दर्शन) आ जाएगी, तब हम समता (अडिग शान्ति) प्राप्त कर लेंगे। इस सबमें, बुद्ध ने निश्चयता की वैदिक कसौटी को अपनाया है। निश्चयता आती है वास्तविक ज्ञान से, वास्तविक ज्ञान मिलता है तात्कालिक अनुभव से, सत्य के प्रत्यक्ष बौद्धिक अन्तर्ज्ञान से जिसे बौद्ध धर्म में 'यथा-भूतंगानदस्सन' कहा गया है। बौद्ध धर्म का आरम्भ एक नवीन, स्वतंत्र धर्म के रूप में नहीं हुआ । अध्यात्म-विद्या या नीतिशास्त्र की आधारभूत बातों पर तो बुद्ध अपने पैतृक धर्म (हिन्दू-धर्म) से सहमत थे, परन्तु उन्होंने उस काल में प्रचलित कतिपय आधारों का विरोध किया। उन्होंने वैदिक कर्मकाण्डवाद को चुपचाप स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। जब उनसे कुछ वैदिक कर्मकाण्डों का पालन करने के लिए कहा गया तब उन्होंने कहा - 'जहां तक तुम्हारे इस कथन का प्रश्न है मुझे अपने परिवार में परम्परागत रूप से प्रचलित यज्ञादि कर्मों को धर्म के नाम पर करना चाहिए, क्योंकि उनके विषय में यह प्रसिद्ध है कि वे मनोवांछित फल देनेवाले हैं, मेरा पक्ष यह है कि मैं पशु-बलि वाले यज्ञादि कर्मों को उचित नहीं मानता कारण कि मैं उस सुख की परवाह नहीं करता जो दूसरों को दु:ख पहुंचाकर मिलता हो।' उनका मानववाद जातीय और राष्ट्रीय अवरोधों को पार कर जाता था। फिर भी सांसारिक मामलों में जो अस्त-व्यस्तता फैली हुई है उसका प्रभाव मनुष्य की आत्मा पर पड़ना स्वाभाविक है। मानवता में जो विक्षोभ, अव्यवस्था है, वह सांसारिक अव्यवस्था का ही प्रतिबिम्ब है। इतिहास की अपनी चेतना विश्वजनीन बन चुकी है। उसकी विषय-वस्तु न तो यूरोप है, न एशिया, न प्राच्य है, न पाश्चात्य वरन् सभी देश-कालों में पायी जाने वाली मानवता ही उसका विषय है। हम चाहें-न-चाहें, राजनीतिक विभेदों एवं विभाजनों के बावजूद दुनिया एक है। हर आदमी का भाग्य दूसरे आदमी से जुड़ा है।

परन्तु हम आज आत्मा की थकान से पीड़ित हैं। हममें अहंकार बढ़ गया है। शत्रु हमारे भीतर ही छिपा है। हमें उसी से लड़ना है। ईश्वर या प्रारब्ध को कोसने से कोई लाभ नहीं, क्योंकि अपने को अपमान और लांछना की स्थिति में ला पटकने की सारी जिम्मेदारी हमारी है। 'आत्मालाभान् न पर विद्यते।' यदि हम शान्ति प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें उस आन्तरिक एकता, उस आत्मिक शान्ति को बनाए रखना होगा, जो शान्ति के अनिवार्य तत्व हैं।

प्रत्यूष

समाज में समरसता और भातृत्व भाव की पोषक पत्रिका

प्रत्यूष (बहुरंगी हिन्दी मासिक)

के आज ही सदस्य बनें। मात्र 600 रुपए वार्षिक।

पता: 2, रक्षाबंधन, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी, उदयपुर (राज.) 313 001

आम में तो है ही, उसकी कहानी में भी बड़ा रस

यह दुनिया का अकेला ऐसा राजा है, जो खास कहलाने की बजाय आम ही कहलाना पसंद करता है। माना जाता है कि फलों के इस राजा की उत्पत्ति करीब पांच हजार वर्ष पहले हुई। भारत के बाहर लोगों से इसका परिचय चीनी यात्री ह्वेनसांग के माध्यम से हुआ।

निष्ठा शर्मा

हमारे देश में किसी की प्रेम कहानी हो या न हो लेकिन शायद ही कोई होगा जिसकी आम कहानी नहीं होगी। और हो भी क्यों नहीं बचपन में बगीचे से चोरी छिपे तोड़ी और नमक लगाकर खाई अंबिया को कोई कैसे भूल सकता है। महिलाएं गर्भवती होने का संकेत कच्चा आम खाकर देती हैं। छांव में बैठकर एक दशहरी खा लें तो मोक्ष की अनुभूति होती है। कोई भी शुभ काम पेड़ के बिना नहीं होता। तभी तो आम के पेड़ का कई पौराणिक ग्रंथों में कल्पवृक्ष, हर इच्छा पूरी करने वाले के रूप में वर्णन मिलता है।

घर में आम के पेड़ हुआ करते थे। बसंत से ही आम के पेड़ में मंजर (मोजरे) की तलाश आंखें करने लगती थी। रोजाना बच्चे पेड़ देखते कि कब यह मंजरी टिकोले (अंबियां) का रूप लेगी। यही नहीं घर के सभी सदस्य उस साल फल कैसा होगा इसकी कल्पना करते थे। इस बीच आंधी आ गई तो पेड़ पर कितने फल बचेंगे, कैसा होगा। इस पर बकायदा चर्चा होती थी। फल लगने के बाद पेड़ की चौकीदारी सख्त हो जाती।

गलती से एक अंबियां किसी ने उठा ली तो कई बार नोकझोंक झगड़े में बदलते भी देर न लगी। फल लगने के बाद पहले भगवान को प्रसाद के रूप में आम चढ़ाया जाता, फिर उसका मजा पूरा परिवार लेता। खास रिश्तेदारों में बांटे जाते।

आम का साइंटिफिक नाम हैं, मैंगीफेरा इंडिका। मैंगों नाम तमिल शब्द मंगाई से आया है। पुर्तगाली इसे मंगा नाम से पुकारने लगे। बाद में यह मैंगो हो गया। तमाम राजा-महाराजा, बादशाह और सुल्तान भी इसके दीवाने रहे।

किस्सा ए आम

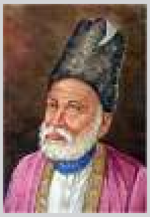

मिर्जा गालिब को आम से बेहद प्यार था और उनके खास दोस्त हकीम रजीउद्दीन खान आम बिलकुल खाना पसंद नहीं करते थे। एक शााम गालिब अपने सभी दोस्तों को तोहफे में मिले आम खिला रहे थे। तभी उधर से सामान लदा एक गधा गुजरा और आम के छिलकों को सूंधकर आगे बढ़ गया। हकीम साहब को मौका मिल गया। उन्होंने कहा– मिर्जा आपने देखा गधे भी आम नहीं खाते। गालिब ने तपाक से कहा– हां सच है, गधे ही आम नहीं खाते।

किस्सा ए खास

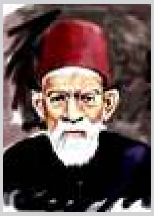

शायर अकबर इलाहाबादी ने एक बार अपने दोस्त को खत लिखा–: नामा न कोई यार का पैगाम भेजिए। इस फसल में कुछ भेजिए तो आम भेजिए। ऐसा जरूर हो कि उन्हें रखकर खा सकूं। * **पुख्ता** अगर हो बीस तो दस* **खाम** भेजिए। मालूम ही है आपको बंदे का एड्रेस। सीधे इलाहाबाद मेरे नाम भेजिए। ऐसा न हो कि आप कहे जवाब में तामील होगी, पहले दाम भेजिए।

(पुख्ता–पके। खाम–कच्चे)

फायदे भी कम नहीं

- फाइबर की मात्रा अधिक होने की वजह से कब्ज में लाभदायक
- हीमोग्लोबिन की मात्रा बढ़ाता है।
- डायरिया में आम की गुठली का पाउडर और लस्सी मिलाकर पीने से आराम मिलता है।
- कोलोस्ट्रोल कम करने में सहायक
- कैंसर की रोकथाम में मददगार।
- गर्भ में पल रहे बच्चे के विकास में सहायक

–**डॉ. शीनू अग्रवाल**, आयुर्वेदाचार्य

गुठली में कर देते छेद

दशहरी के आम की कहानी बड़ी दिलचस्प है। बात आज से 300-400 साल पहले की है। उत्तरप्रदेश में मलीहाबाद से व्यापारी अवध आम बेचने आया करते थे। यह सिलसिला हर साल का था। एक बार आम पर मालगुजारी को लेकर कुछ झगड़ा हुआ तो लोगों ने अपने आम सड़क किनारे फेंक दिए और चले गए। सड़क पर फेंके गए आमों में से ही कुछ पौधे निकले। यही पौधा जब बड़ा हुआ तो नवाब साहब की खिदमत में इसका फल पेश किया गया। नवाब को इसका स्वाद इतना पसंद आया कि उन्होंने इसे नाम देने की सोची। चूंकि यह पेड़ अवध के दशहरी गांव के पास लगा था इसलिए इसे दशहरी आम कहे जाने लगा। एक किस्सा यह भी है कि जब नवाब को पता चला कि पेड़ सिर्फ उसकी गुठली से लगाया जा सकता है तो उन्होंने एक नियम बनाया। इसके मुताबिक जब भी किसी बाहर वाले को दशहरी खाने को दिया जाता था तो उसकी गुठली में छेद कर देते थे, ताकि अन्यत्र पेड़ उगने का कोई रिस्क ही न रहे।

ऐसा हुआ आम लंगड़ा

कहते हैं, बनारस में एक शिव मंदिर में एक दिन एक साधू आया और मंदिर के पुजारी से वहां कुछ दिन ठहरने की आज्ञा मांगी। उसके पास आम के दो छोटे-छोटे पौधे थे। जो उसने मंदिर के पीछे रोप दिए। वह चार साल तक वहीं ठहरा। चौथे वर्ष आम की मंजरिया निकल आई, जिन्हें तोड़कर साधु ने भगवान पर चढ़ाई। फिर पुजारी से बोला, मेरा काम पूरा हुआ। तुम इनकी देखरेख करना, इनमें फल लगे, तो उन्हें भगवान पर चढ़ा देना, फिर प्रसाद के रूप में बांट देना, लेकिन समूचा आम किसी को मत देना। गुठलियों को जला डालना, इतना कह साधु बनारस चला गया। आम की चर्चा काशी नरेश तक पहुंची। फिर पुजारी से कलमें लगाने की अनुमति मांगी। उसी रात भगवान शंकर ने स्वप्न दिया और कलम राजा को देने की बात कही। दरअसल साधु ने पौधों की देखरेख की जिम्मेदारी जिस पुजारी को दी थी, वह लंगड़ा था इसलिए इन वृक्षों के फल का नाम लंगड़ा पड़ा। इसी तरह भागलपुर के एक गांव से फजली नामक एक औरत के घर के पेड़ पर लगा मीठा और आकार में बड़े आम का नाम ही फजली पड़ गया।

हिचकें नहीं मधुमेह रोगी

आम डायबिटीज के पेशेंट्स के लिए पूरी तरह से सुरक्षित है। मैं उन्हें रोजाना एक आम खाने की सलाह देती हूं। इसमें ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम है और अन्य पोषक तत्व ज्यादा होता है, जो ब्लड शुगर नियंत्रित करने में मदद करता है।

रुजुता दिवेकर, आहार विशेषज्ञ

Mahesh Kumar Dodeja

SHISHU RANJAN

Outside Delhigate, Udaipur - 313 001 (Raj.)
Tel. : 0294 - 2529504 (S), 0294 - 2413461 (R), Mob.: 9829887900

स्वाद और सेहत से भरपूर मटके का पानी

गर्मी के मौसम में पानी हमें हर पल ऊर्जा प्रदान करता है। उस पर भी पानी अगर मटके का हो, तो क्या कहने। स्वाद और सेहत से भरपूर मटके के पानी के लाभों के बारे में जानकारी दे रही हैं - ज्योति सोही

मिट्टी के बर्तनों का स्थान धातु के बर्तनों ने ले लिया है, मगर आज भी किसी न किसी रूप में मिट्टी निर्मित बर्तन अपनी पहचान बनाए हुए हैं। मिट्टी की सौंधी-सौंधी महक हमारे मन को तो भाती ही है, साथ ही यह हमारे तन के लिए भी किसी औषधि से कम नहीं। मिट्टी में कई प्रकार के रोगों से लड़ने की क्षमता है। दरअसल मटका अपने अंदर पानी में जमे धूल के कणों और सूक्ष्म जीवाणुओं को सोख लेता है, जिससे पानी साफ हो जाता है।

अमृत समान है मटके का पानी

पीढ़ियों से भारतीय घरों में पानी स्टोर करने के लिए मिट्टी के बर्तन यानी घड़े का इस्तेमाल किया जाता रहा है। आज भी कुछ लोग ऐसे हैं, जो मिट्टी से बने बर्तनों में पानी पीते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, मिट्टी के बर्तनों में पानी रखा जाए, तो उसमें मिट्टी के गुण आ जाते हैं। इसलिए घड़े में रखा पानी हमें स्वस्थ बनाए रखने में अहम भूमिका निभाता है।

बीमारियों से रखे दूर

गर्मी शुरू होते ही सभी प्रकार के बैक्टीरिया और वायरस हमारे इर्द-गिर्द सक्रिय हो जोते हैं। इनके चलते हमारे आसपास मलेरिया, पीलिया, टाइफॉएड और डायरिया जैसी बीमारियां मंडराने लगती हैं। मटके का पानी ऐसे रोगों लड़ने में मददगार साबित होता है।

विषैले पदार्थ सोखे

मिट्टी में शुद्धीकरण का एक ऐसा गुण पाया जाता है, जिससे वह सभी विषैले पदार्थों को अपने अंदर सोख लेती है और पानी में सभी जरूरी सूक्ष्म पोषक तत्व मिलाती है। ऐसे में मिट्टी के मटके का पानी सही तापमान पर रहता है, ना बहुत अधिक ठंडा ना गर्म। चाहे बच्चे हों या बुजुर्ग, हर कोई इसे पी सकता है।

...ताकि पानी मिले साफ और सुरक्षित

- घड़े या सुराही का पानी रोज सुबह बदल देना चाहिए। अगर अगले दिन सुबह पानी बच गया है तो उसे फेंक दें और ताजा पानी भर दें।
- मटके से पानी निकालने के लिए भी साफ बर्तन का प्रयोग किया जाना चाहिए, जिससे स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रतिकूल असर से बचा जा सके।
- घड़े के अंदरूनी हिस्से को हाथ से या स्क्रब से रगड़कर साफ न करें। इससे उसके पोर्स बद हो जाने का खतरा रहता है। पोर्स बंद होने से उसकी कूलिंग क्षमता कम हो जाती है।
- अंदर के हिस्से को साफ करने के लिए रोज सुबह पानी बदलने से पहले साफ पानी डालकर और फिर हिलाकर बाहर फेंक दें। घड़ा अपने आप साफ हो जाएगा।
- बाहर के हिस्से को हाथ से रगड़कर साफ कर सकते हैं। आमतौर पर घड़ा एक सीजन चल जाता है। अगले सीजन में घड़े को बदल दें। अगर बीच में कभी घड़ा अंदर से गंदा नजर आए, पानी में कोई गंध महसूस हो, तो सीजन से पहले भी बदल सकते हैं।
- घड़े को किसी भी चीज से ढकें लेकिन यह जरूर सुनिश्चित करें कि वह पूरी तरह से ढका हुआ हो जिससे कि उसके भीतर कुछ घुस न पाए।

गर्भवती महिलाओं के लिए

आमतौर पर गर्भवती महिलाओं को फ्रिज का ठंडा पानी नहीं पीना चाहिए। मिट्टी के घड़े या सुराही का पानी उनके लिए बेहद फायदेमंद है। घड़े में रखा पानी न सिर्फ उनकी सेहत के लिए अच्छा है, बल्कि यह गर्भवती महिलाओं के मन को शांत भी रखता है।

गले को ठीक रखे

अकसर गर्मियों में ठंडा पानी पीने की तलब होती है और हम फ्रिज से ठंडा पानी लेकर बार-बार पीते भी हैं। मगर बहुत ज्यादा ठंडा होने के कारण यह गले और शरीर के अंगों को एक दम से ठंडा कर शरीर पर बुरा प्रभाव डालता है। इससे गले की कोशिकाओं का ताप अचानक गिर जाता है, जिससे गले का पकना और ग्रंथियों में सूजन आने की समस्या होती

है। मगर मटके का पानी कोई बुरा प्रभाव नहीं डालता।

चयापचय को बढ़ावा

घड़े के पानी के उपयोग से प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने में मदद मिलती है। प्लास्टिक की बोतलों में पानी स्टोर करने से उसमें प्लास्टिक की अशुद्धियां एकत्रित हो जाती हैं। यह भी पाया गया है कि घड़े में पानी स्टोर करने से शरीर में टेस्टोस्टेरोन हार्मोन का स्तर बढ़ जाता है।

गैस की समस्या से छुटकारा

यदि आप फ्रिज का पानी पीते हैं, तो पेट में कई तरह की समस्याएं उत्पन्न होती हैं। इसकी तासीर गर्म होती है, जो वात को बढ़ाता है। मटके का पानी बहुत अधिक ठंडा ना होने से वात नहीं बढ़ता और पेट भी जल्दी साफ हो जाता है। इससे पेट में गैस की समस्या की आशंका बहुत कम हो जाती है। डकार की आशंका भी कम हो जाती है।

एसिडिटी से दिलाए मुक्ति

मिर्च-मसालेदार खाना खा लेने से कई बार एसिडिटी की समस्या पैदा हो जाती है। घड़े के पानी में मिट्टी के क्षारीय तत्व और पानी के तत्व मिलकर जरूरी पीएच संतुलन बनाते हैं, जो शरीर को कई तरह की हानि और एसिडिटी से बचाता है।

प्रतिरक्षा प्रणाली रहे मजबूत

सामान्य बीमारियों को दूर करने के लिए प्रतिरक्षा प्रणाली का मजबूत होना बहुत जरूरी है। जब मटके में पानी रखा जाता है, तो उसमें मिट्टी के गुण बढ़ जाते हैं, जिससे प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा मिलता है। मटके के पानी में मृदा के गुण होने की वजह से शरीर को विषैले तत्वों से मुक्त किया जा सकता है।

पीएच संतुलन की बढ़ोतरी

इसमें मिट्टी के क्षारीय गुण विद्यमान होते हैं। क्षारीय तत्व पानी की अम्लता के साथ तालमेल बनाकर उचित पीएच संतुलन प्रदान करते हैं। इस पानी को पीने से एसिडिटी पर अंकुश लगाने और पेट के दर्द से राहत पाने में मदद मिलती है।

कीमत भी नहीं है अधिक

बाजार में मिलने वाले विभिन्न आकार के मटकों के साथ लंबी गर्दन वाली सुराही भी मौजूद है, जिनकी कारीगरी और डिजाइन लोगों को खूब पसंद आती है। इन्हें कम पानी रखने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। मिट्टी से बने इन बर्तनों में बारीक छिद्र होते हैं, जिनसे छनकर बाहरी हवा मटके के अंदर प्रवेश करती है और उसे ठंडक देती है। बाजार में विभिन्न आकार-प्रकार के मटके उपलब्ध हैं। इनमें मटका टंकी, गोल मटका व सुराही आदि प्रमुख हैं। इनकी कीमत 60 से लेकर 350 रुपए तक है, जो उसकी क्षमता व मटके के आंतरिक आयतन पर निर्भर करती है। बाजार में मटके के आकार के अनुसार स्टैंड की बिक्री भी हो रही है। लोहे व एल्युमिनियम से बने स्टैंड खासतौर पर बाजार में बिक रहे हैं।

जब अनपढ़ थे, ज्यादा जागरूक थे

डॉ. अशोक कुमार गदिया

बचपन में हम गलत चीजों को सहन नहीं कर विरोध करते थे। बेशक अनपढ़ या कम पढ़े-लिखे थे, मगर जागरूक थे। हमारे विरोध के आगे प्रशासन भी सचेत हो जाता था। अनुशासित रहते थे। जिस बात का हम विरोध करते थे, वे उसे होने नहीं देते थे या दुरुस्त कर देते थे। माना कि हम सरकार को टैक्स देते हैं। बदले में सरकार से सुविधाओं की उम्मीद करते हैं, मगर नागरिकों का भी फर्ज बनता है। हमारा नींद से जागना जरूरी है। आज बाजार की जो चीजें खा रहे हैं या परिवार को खिला रहे हैं, वह विषाक्त है। इसका विरोध करना होगा। घरों में आने वाले प्रदूषित जल के बारे में सम्बंधित विभाग को शिकायत करें। ईमेल व व्हाट्सअप के जरिए लोगों को जगाएं। बताएं कि फलां चीज नुकसानदेह है, विषाक्त है। मगर हम ऐसा नहीं कर रहे। दुर्भाग्य है कि हम अपने विनाश को स्वयं निमंत्रण देने पर आमादा हैं। दिखावे की समाज सेवा कर रहे हैं। अपना घर तो साफ-सुथरा चाहते हैं मगर शहर की चिंता नहीं है। हमारी जिम्मेदारी बनती है कि अपने आसपास का क्षेत्र भी साफ-सुथरा रखें। महानगरों की नगर निगमों के पास साफ-सफाई का करोड़ों रुपये का बजट होता है, फिर भी साफ-सफाई चौपट है। सरकारी विभागों के पास आधुनिक तकनीक है। लेकिन काम में सुधार नहीं। प्रधानमंत्री के स्वच्छता अभियान को सफलता तभी मिलेगी, जब हम जागरूक होंगे। देश की नदियों का हाल बुरा है। गंगा और यमुना अस्तित्व खोने की ओर अग्रसर हैं। हिन्डन नदी तो नाला बनती जा रही है। उत्तराखंड में भयानक आपदा आई। कश्मीर में भी कुदरती कहर बरपा। ये प्राकृतिक आपदाएं हमें अभी से चेता रही हैं। संकेत कर रही हैं कि अगर हम न चेते तो भविष्य में भारी तबाही मचेगी। तब कुछ नहीं कर पाएंगे। पर्यावरण प्रदूषण के मुख्य दो कारण हैं। एक, अंधाधुंध शहरीकरण। दूसरा, गैर जिम्मेदार रवैया। हमारा काम वोट और टैक्स देना ही नहीं है। अपने आपको कमतर न समझें। अपनी जिम्मेदारी समझें। खुद पहल करें और जिम्मेदार नागरिक साबित हों। आसपास अगर कुछ ठीक न हो रहा हो तो विरोध करें। हम नॉलेज टू विजडम को नहीं जान पा रहे। अपनी समझ को ठीक करना है। अपने घर तो ठीक कर लिया मगर मोहल्ले बहुत गंदे हैं। विदेशी हम पर हंसते और तंज कसते हैं। हम गंगा को मां मानते हैं। उसे पवित्र बताते हैं। मगर कूड़ा-कचरा भी उसी में बहाते हैं। यह विडम्बना नहीं तो और क्या है। नदियों को प्रदूषित करने की एक परम्परा-सी चल पड़ी है। बड़े नाले, सीवर, कूड़ा-कचरा सब नदियों में मिल रहा है। शहरों में सरकारी सीवर ट्रीटमेंट प्लांट या तो कम क्षमता वाले हैं या अधिकांश खराब हैं। इस ओर सोचना जागरूक बनना ही होगा। कानून की पढ़ाई कर रहे नौजवानों और विधि के शिक्षकों से अनुरोध है कि वे इस बारे में जागरूक बनें। अधिकारियों को जगाने के लिए जमकर आरटीआई डालें। जवाब तलब करें। उन्हें मजबूर कर दें कि वे पर्यावरण के लिए महज कागजों का सहारा न लें, हकीकत में भी कुछ कर दिखायें। स्वच्छता के प्रति उपेक्षा का भाव ठीक नहीं है। जब छोटे थे, घर में जूते पहनकर घुसना मना था। हमें पानी का सदुपयोग करना सिखाया गया। नहाने कुंए पर जाते थे। लौटते समय एक बाल्टी पानी भरकर घर लाते थे। यह काम रोज करते थे। इससे घर में पानी की कमी भी पूरी हो जाती थी और जगह-जगह कीचड़ भी नहीं होता था। जब भोजन दिया जाता था, तो कहा जाता था कि थाली में जूठा बिल्कुल नहीं छोड़ा। थाली को भोजन के बाद सूखी मिट्टी और बाद में कपड़े से साफ करते थे। इससे पानी व्यर्थ नहीं जाता था। मोहल्ले में भी कीचड़ या गंदगी दिखाई नहीं देती थी। इसका सुखद परिणाम यह होता था कि मक्खी-मच्छर भी नहीं पनपते थे। तब हम अनपढ़ या कम पढ़े-लिखे होते थे। मगर घर व मोहल्ले को पवित्र बनाये रखने को सदैव तत्पर रहते थे। आज ज्यादा पढ़े-लिखे हैं, लेकिन स्वच्छता से कोसों दूर हैं। हम एडवांस होने के नाम पर पिछड़ते जा रहे हैं। हमारी सोच नकारात्मक है। माइंड सेट होना जरूरी है। हमें सबसे पहले अपना मानसिक प्रदूषण दूर करना होगा। इसे कोई सरकार या उसकी कोई सस्ती नहीं बदल सकती। इसलिए स्वामी विवेकानंद की बात मानें- 'उठेंगें, जागें और विश्व को जगाएं' यही हमारा मूलमंत्र होना चाहिए।

(ये लेखक के अपने विचार हैं, लेखक मेवाड़ विश्वविद्यालय

ब्रह्मोस का फिलीपींस को निर्यात

दुर्गाशंकर मेनारिया

भारत ने फिलीपींस को ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइलों की पहली खेप 19 अप्रेल को सौंप दी। ब्रह्मोस पाने वाला फिलीपींस पहला बाहरी देश है। भारत ने जनवरी 2022 में फिलीपींस से ब्रह्मोस मिसाइल की बिक्री के लिए 375 मिलियन डॉलर (3130 करोड़ रुपए) की डील की थी। भारत ने फिलीपींस को कितनी मिसाइलें दीं, अभी इसका पता नहीं चला हैं। इंडियन एयरफोर्स ने सी-17 ग्लोब मास्टर विमान के जरिये इन मिसाइलों को फिलीपींस मरीन कॉर्प्स को सौंपा। इन मिसाइलों की स्पीड 2.8 मैक और मारक क्षमता 290 किमी है। एक मैक ध्वनि की गति 332 मीटर प्रति सैकण्ड होती है। फिलीपींस को सौंपी गई मिसाइल की स्पीड ध्वनि की गत से 2.8 गुना ज्यादा है। फिलीपींस को उस समय मिसाइल सिस्टम की डिलीवरी मिली है, जब उसके और चीन के बीच साउथ चाइना सी में तनाव बढ़ा हुआ है। फिलीपींस ब्रह्मोस के तीन मिसाइल सिस्टम को तटीय इलाकों (साउथ चाइना सी) में तैनात करेगा, ताकि चीन के खतरे से निपटा जा सके। ब्रह्मोस के हर एक सिस्टम में दो मिसाइल लॉंचर, एक रडार और एक कमांड एंड कंट्रोल सेंटर होता है। इसके लिए सबमरीन, शिप एयरक्राफ्ट से दो ब्रह्मोस मिसाइलें 10 सैकण्ड के अंदर दुश्मन पर दागी जा सकती हैं। इसके अलावा भारत फिलीपींस को मिसाइल ऑपरेट करने की भी ट्रेनिंग देगा।

फिलीपींस ने क्यों खरीदी?

फिलीपींस की चीन के साथ हाल ही में साउथ चाइना सी में कई बार झड़प हुई है। ब्रह्मोस मिसाइलों से समुद्र में फिलीपींस की ताकत बढ़ेगी और समुद्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को भी रोका जा सकेगा।

भारत को फायदे

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार फिलीपींस के साथ यह डील देश को रक्षा क्षेत्र में एक्सपोर्टर बनाने और आत्मनिर्भर भारत को बढ़ावा देने में मदद देगी। इस डील से मिलिट्री इंडस्ट्री का भी मनोबल बढ़ेगा और साउथ ईस्ट एशिया में भारत को भी एक बड़ा भरोसेमंद एक्सपोर्टर के रूप में देखा जाएगा। साथ ही इस डील से भारत-फिलीपींस के रिश्तों में मजबूती आएगी और चीन को दोनों देशों की एकजुटता का संदेश जाएगा।

अर्जेंटीना-वियनाम में भी मांग

ब्रह्मोस एयरोस्पेस के डायरेक्टर जनरल अतुल दिनाकर राणे ने जून 2023 में कहा था- अर्जेंटीना, वियतनाम सहित 12 देश ब्रह्मोस मिसाइल सिस्टम को खरीदने में रूचि दिखा चुके हैं। बाहरी देशों की ब्रह्मोस की मांग बताती है कि यह मिसाइल सिस्टम बहुत भरोसेमंद है।

होममेड हेयर डाई महकते - लहराते बाल

बाजार में मिलने वाले कलर और डाई में अमोनिया जैसे खतरनाक कैमिकल होने के कारण यह बालों के साथ-साथ सेहत के लिए भी हानिकारक होते हैं। इनसे न केवल हमारे स्कैल्प खराब होते हैं बल्कि कैंसर जैसे गंभीर रोग भी हो सकते हैं। आप घर में उपयोग की जाने वाली चीजों का इस्तेमाल भी हेयर डाई के रूप में कर सकते हैं।

मेहंदी

मेहंदी प्राकृतिक उत्पाद है। इससे प्राकृतिक तरीके से बालों को कलर किया जा सकता है। यह कलर करने के साथ ही बालों को मज़बूत बनाती है और स्कैल्प की कंडिशनिंग करती है।

सामग्री : 1 कप हीना पाउडर
2 कप नींबू का रस
1 टी स्पून विनेगर

ऐसे बनाएं : एक कप हीना में दो कप नींबू का रस व विनेगर डालकर अच्छी तरह मिलाते हुए चिकना पेस्ट बना लें। इस मिश्रण को 4-6 घंटे के लिए रख दें। बालों को सेक्शन में बांटकर हीना पेस्ट लगाएं व कंघी करें पूरे बालों पर हीना पेस्ट लगाने के बाद प्लास्टिक से सिर को कवर करें। फिर 2-3 घंटे के लिए छोड़ दें और फिर बाल धो लें।

कॉफी

कॉफी एक तरह की नेचुरल हेयर डाई है। इसमें बाल सुनहरे रंग के हो जाते हैं।

सामग्री : 1 कप कॉफी
2 कप लीव-इन कंडिशनर
2 टीस्पून कॉफी ग्राउंड्स

ऐसे बनाएं : कॉफी में पानी डालकर स्ट्रॉन्ग

कॉफी बनाएं और उसे ठंडा होने के लिए छोड़ दें। फिर उसमें लीव इन कंडिशनर व कॉफी ग्राउंड्स (मशीन में कॉफी बनाने के बाद बची हुई कॉफी) मिलाकर बालों पर लगाएं। एक घंटे बाद धो दें। आपके बाल एकदम शेड डार्क हो जाएंगे। बालों को धोने के लिए पानी की जगह एप्पल साइडर विनेगर का इस्तेमाल करें।

ब्लैक टी

ब्लैक टी सबसे ज्यादा असरकारक नैचुरल हेयर डाई है। ब्लैक टी बालों को प्राकृतिक रूप से काला व चमकदार बनाने में मदद करती है।

सामग्री : 2 टीस्पून ब्लैक टी
1 कप पानी
1 टीस्पून नमक

ऐसे बनाएं : पानी में चायपत्ती डालकर उबालें और फिर नमक मिलाएं। इसे ठंडा होने के लिए छोड़ दें। इस मिश्रण से बाल धोएं और 15 मिनट के लिए छोड़ दें। अब ठंडे पानी से धो दें।

आंवला

आंवले में विटामिन सी की प्रचुरता के कारण यह बालों का विशेष ध्यान रखता है। इससे बालों को नरेशन मिलता है साथ ही यह बालों को मोइश्चराइज भी करता है।

सामग्री : 1 कप ताजा हीना पेस्ट
3 टीस्पून आंवला पाउडर
1 टीस्पून कॉफी पाउडर

ऐसे बनाएं : एक प्लास्टिक बाउल में सभी सामग्रियां मिक्स करके चिकना पेस्ट बनाएं अगर पेस्ट गाढ़ा हो तो आवश्यकतानुसार पानी मिलाएं। हाथों में ग्लव्स पहनकर ब्रश की मदद से बालों में मिक्सचर लगाएं और 1 घंटे के लिए छोड़ दें। फिर माइल्ड शैम्पू से बाल धो दें। इसे महीने में एक बार ही लगाएं।

-गीता गोस्वामी

With Best Compliments

ठा. सा. टिकमसिंह – श्रीमती चंदाकंवर

फोन : 2584082, मो.: 9414167024

ठा. सा. गिरिराजसिंह
श्रीमती राजश्रीकंवर

ठा. सा. गोविन्दसिंह
श्रीमती मंजुकंवर

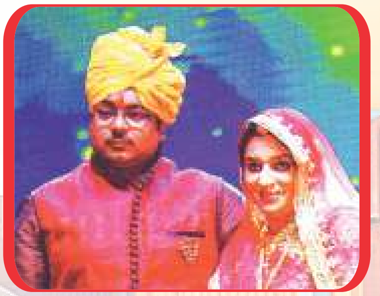

कु. सा. गगनसिंह
श्रीमती रीनाकंवर

UDAIPUR GOLDEN
TRANSPORT COMPANY

Fleet Owner's & Transport Contractor's

HEAD OFFICE :
13, Behind Central Jail,
Udaipur-313001 (Raj.)

Rao Tikam Singh S/o Late Jaswant Singh
Rao Giriraj Singh S/o Late Jaswant Singh
Rao Govind Singh S/o Late Jaswant Singh
Village : Sagwardiya, Dist. Banswara (Raj.)

तैयार हो जाएं अचार डालने के लिए

शिखा चौधरी

भिंडी व हरी मिर्च का अचार

सामग्री: ■ भिंडी 250 ग्राम ■ हरी मिर्च 100 ग्राम ■ कच्चे आम 3 ■ राई एक चम्मच ■ लहसुन–अदरक का पेस्ट एक चम्मच ■ सौंफ एक चम्मच ■ अचार का मसाला 2 चम्मच ■ नमक स्वादानुसार ■ सरसों का तेल 250 ग्राम

विधि: भिंडी और हरी मिर्च धोकर काट लें। तड़के के लिए चार–पांच चम्मच तेल कड़ाही में गरम करें। गरम होने पर राई और सौंफ डालें। फिर लहसुन–अदरक का पेस्ट डालकर भूनें। भिंडी को उसमें डालकर तेज आंच पर तब तक भूनें। जब तक उसका लिसलिसापन समाप्त न हो जाए। फिर उसमें हरी मिर्च डालकर भूनें। आंच से उतारकर ठंडा करें, फिर बची–खुची सामग्री मिलाएं। बाकी तेल को गरम करें। उसे पकाकर ठंडा होने पर अचार के ऊपर डाल दें।

आम का मीठा अचार

सामग्री: ■ आम 1 किलो (कच्चे) ■ गुड़ 500 ग्राम ■ सौंफ 50 ग्राम ■ कलौंजी 50 ग्राम ■ नमक 100 ग्राम ■ लाल मिर्च पाउडर इच्छानुसार ■ हींग चुटकी भर ■ सरसों का तेल 150 ग्राम

विधि: कच्चे आम धोकर छील लें। उन्हें छोटी–छोटी फांकों में काटकर थोड़ा सा सुखा लें। सूख जाने पर नमक मिलाकर रख दें। पानी छूट जाने पर आम की फांकें निकाल लें। गुड़ को पानी में भिगो लें। एक कड़ाही में सरसों का तेल गर्म करें। उसमें हींग डालें। भुन जाने पर सब मसाले डाल दें। उन्हें भूनकर उसमें अचार की फांकें डालें। अब थोड़ा भुनने पर गुड़ वाला नमक का पानी उसमें मिलाएं। गुड कड़ाही में चिपकने लगे तो उतारकर उसमें गरम मसाला मिला लें। ठंडा होने पर अचार को साफ और सूखे बरतन में भरकर रखें। दो–चार दिन धूप में उसे रखें। मीठा अचार तैयार है।

अदरक का अचार

सामग्री: ■ अदरक–1/2 किलो
■ हल्दी दो छोटे चम्मच
■ लाल मिर्च पाउडर 3 छोटा चम्मच
■ हींग 1/2 छोटा चम्चम
■ राई पिसी हुई 1/2 छोटा चम्मच
■ काला नमक 2 छोटे चम्मच
■ सफेद नमक डेढ़ छोटा चम्मच
■ सौंप पिसी हुई 2 छोटे चम्मच
■ मेथी दाना दरदरा एक छोटा चम्मच
■ सरसों का तेल ढाई कप

विधि: अदरक को छील लें और फिर लंबे–लंबे टुकड़े कर लें। धूप में सुखा दें। तेल को इतना गर्म करें कि धुआं निकालने लगे। गैस बंद कर दें। थोड़ा सा ठंडा होने पर सारे मसाले और अदरक डाल दें। ठंडा होने पर भर दें।

इस अचार से पाचन शक्ति बढ़ती है और खांसी–जुकाम में फायदा होता है।

कच्ची हल्दी का अचार

सामग्री: ■ कच्ची हल्दी 1/2 किलो ■ सौंफ 4 छोटा चम्मच ■ कलौंजी 2 छोटे चम्मच ■ राई 2 छोटे चम्मच ■ नमक 1/2 कप ■ लाल मिर्च 3 छोटे चम्मच ■ अजवायन एक छोटा चम्मच ■ सरसों का तेल 2 कप ■ सफेद सिरका दो छोटे चम्मच ■ हींग 1/2 छोटा चम्मच

विधि: हल्दी को धोकर अच्छी तरह पोछें। छीलें और काटे या कद्दूकस करें। तेल अच्छी तरह गर्म करें। गैस बंद करके पहले राई और फिर सभी मसाले और हल्दी डाल दें। अचार को लंबे समय तक रखना हो तो सिरका डालें अन्यथा नहीं।

हल्दी का अचार खून साफ करता है और हड्डियां मजबूत करता है।

मिक्स अचार

सामग्री: ■ **कच्ची सब्जियां** – बिंस, कमलककड़ी, घीया, गाजर, आम, हरी मिर्च, कटहल, नींबू सभी 1 किलो
■ अदरक– 50 ग्राम
■ प्याज 100 ग्राम
■ नमक 50 ग्राम
■ लाल मिर्च (पिसी) 25 ग्राम
■ गरम मसाला 40 ग्राम
■ सरसों का तेल 2300 ग्राम
■ ग्लेशियन एसिटिक एसिड 8 ग्राम
■ सोडियम बेंजोएट 1 ग्राम

विधि: सब्जियों को धोकर छील लें। उन्हें छोटे–छोटे टुकड़ों में काट लें। उबलते पानी में डालकर उन्हें थोड़ा सा पकाएं। हरी मिर्च, नींबू, आम न उबालें। उबली सब्जियों को छानकर सुखा लें। प्याज–अदरक को धोकर छील लें। सरसों का तेल गरम करके उनमें अदरक प्याज डालकर भूनें। फिर सारी सब्जियां और मसाले डालकर कुछ देर भूनें। फिर उन्हें आंच से उतारें। उस गरम–गरम में ही ग्लेशियन एसिड मिलाएं। थोड़े से पानी में सोडियम बेंजोएट घोलकर अचार में मिलाएं। फिर उसे सूखे साफ बरतन में भर लें।

Mahesh Dhannawat, Director

With Best Compliments

Mobile
8740894999
9784804888

HOTEL GLOBAL INN

FACILITIES

- 17 Rooms
- Air Conditioner
- Wi-Fi Elevator
- In-Room Safe
- Iron
- Security Enabled Locks
- LED with Satellite Channels
- Hair Dryer
- Onsite Parking
- Plush Mattresses
- 24 Hrs Room Services

Mobile: 94133 18989

JAIN PROPERTIES

Contact For : Purchase a Sales of Property
Land, building, Plots, Banglow Etc.

7, Dhannawat Tower, Shastri Cricle, Bhopalpura Road, Udaipur (Raj.)
e-mail: dhannawat98@gmail.com

इंडोनेशियाः सबसे बड़ा हिंदू मंदिर- प्रम्बानन

जयंत खोबसपड़े

मुस्लिम बहुल देश इंडोनेशिया के योग्यकार्ता शहर के बाहरी इलाके में 240 हिंदू मंदिरों से सुसज्जित सदियों पुराना प्रम्बानन मंदिर, दक्षिण पूर्व एशिया के साथ भारत के गहरे सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंधों का प्रमाण है। इस शहर से 17 किलोमीटर उत्तर पूर्व में 10वीं सदी का प्रम्बानन मंदिर, इंडोनेशिया का सबसे बड़ा और प्रमुख हिंदू मंदिर माना जाता है। बाली के अलावा यह मंदिर भी भारतीय पर्यटकों को काफी आकर्षित करता है। क्षेत्र के कई मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिए भारत आर्थिक सहायता उपलब्ध कराता रहा है। साथ ही भौगोलिक और सांस्कृतिक कूटनीति के तहत अपनी सेवाएं भी देता है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने आसियान देशों-लाओस, वियतनाम, इंडोनेशिया और कंबोडिया में कई ऐतिहासिक स्थलों के जीर्णोद्धार का काम भी किया है। हालांकि वह प्रम्बानन मंदिर के जीर्णोद्धार के सहयोग में शामिल नहीं रहा। प्रम्बानन मंदिर का मूल परिसर भूकम्पों और ज्वालामुखी विस्फोटों से नष्ट हो गया था। 17 वीं शताब्दी में इसे फिर से खोजा गया और अब पुन: स्थापित किया जा रहा है। पहले इसका निर्माण पत्थरों को आपस में जोड़ने की विधि से किया गया था। यह एक बहुत ही जटिल संरचना है। अब तक, परिसर के 240 मंदिरों में से सिर्फ 22 मंदिरों का ही जीर्णोद्धार हो

पाया है। संरचनाओं को पुन: स्थापित करने का काम चल रहा है। अनूठी निर्माण शैली का यह मंदिर तीन मुख्य हिंदू देवताओं 'त्रिमूर्ति'-ब्रह्मा, विष्णु और महेश (शिव) को समर्पित है। 'मंदिर की संरचना को मजबूत करने के लिए दोनों विधि- पत्थर को आपस में जोड़ने की मूल पारंपरिक विधि और कंक्रीट का उपयोग कर आधुनिक विधि से कार्य किया जा रहा है। जीर्णोद्धार का कार्य 1918 से चल रहा है।' मूल मंदिर परिसर की कोई भी तस्वीरें नहीं होने से जीर्णोद्धार कार्य काफी कठिन है। चूंकि यह यूनेस्को विरासत स्थल है। ऐसे में नियम के अनुसार जीर्णोद्धार के लिए 25 फीसद से अधिक नए पत्थरों का इस्तेमाल करने की अनुमति नहीं है। यह भी एक कारण है कि इस कार्य में काफी समय लग रहा है।

मूल संरचना

प्रम्बानन मंदिर की मूल संरचना आयातकार थी, जिसमें एक बाहरी प्रांगण, मध्य प्रांगण और आंतरिक प्रांगण हैं। मंदिरों को ऊंची और निचली छत में विभाजित किया गया है। ऊंची छत पर शिव, विष्णु और ब्रह्मा को समर्पित तीन प्रमुख मंदिर हैं और उनके सामने पशु वाहनों के तीन छोटे मंदिर हैं। विष्णु मंदिर के सामने गरुड़, शिव मंदिर के सामने नंदी, और ब्रह्मा मंदिर के सामने अंगसा मंदिर हैं। शिव मंदिर सबसे बड़ा और सबसे प्रमुख है। एक पुजारी के अनुसार मंदिर में दिन में तीन बार पूजा होती है। सुबह आठ बजे 'सूर्य पूजा दोपहर के आसपास 'रेना पूजा' और सूर्यास्त में अंतिम पूजा की जाती है।' इंडोनेशिया और भारत सांस्कृतिक रूप से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और हिंदू धर्म भारत से जावा तक फैला है। यह मंदिर दक्षिण पूर्व एशिया के साथ भारत के गहरे सांस्कृतिक संबंधों का प्रमाण है। (**लेखक आसियान में भारत के राजदूत हैं।**)

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

व्यापार में लगे लोगों को परिस्थितियों के अनुकूल सोच समझकर ही निर्णय लेना चाहिए। भाई–बहिन आपसे नाराज़ हो सकते हैं, महिलाएं स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। विद्यार्थी वर्ग को सकारात्मक परिणाम की उम्मीद करनी चाहिए।

वृषभ

नौकरी और कारोबार में लोगों से सामंजस्य बिठाकर चलें। काम के बोझ से घबराए नहीं, आय में वृद्धि होगी। वादों और अटकलों पर भरोसा नहीं करें। जीवन साथी से मनमुटाव, रहेगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से माह उत्तम है। नौकरी पेशा जातकों का नौकरी से मोहभंग हो सकता है।

मिथुन

पुराने सम्बन्धों से मदद मिलेगी। परिवारजन में व्याधियों का प्रभाव रहेगा। सामान्य से अधिक परिश्रम करना पड़ सकता है। आय सामान्य, स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

कर्क

जो अतिरिक्तधन आपके पास है, उसे विशेषज्ञों की सलाह से सही जगह निवेश करें। महत्वपुर्ण निर्णयों में गोपनीयता बनाए रखें, स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहे। घर–परिवार में धार्मिक आयोजन होंगे, विद्यार्थी वर्ग रचनात्मक कार्यों में अच्छा कर पायेगें, नौकरी में आशंकाए रहेंगी।

सिंह

माह के प्रारंभ में आर्थिक तंगी हो सकती है। जो भी कार्य करें उस पर पूरा विचार कर निर्णय लें, लोग आपके कार्य की प्रशंसा करेंगे। स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएं हो सकती हैं, विद्यार्थी पढ़ाई के साथ–साथ अन्य सह शैक्षिक गतिविधियों में भी सफलता प्राप्त करेंगे।

कन्या

माह के प्रारंभ में विरोधी परेशान कर सकते हैं, आय का ग्राफ ऊंचा हाकर धरेलू चिंता एवं समस्याएं हल होंगी। यात्रा करने से बचें। अविवाहितों को विवाह प्रस्ताव मिलेंगे।

तुला

अपनी सीमा को जाने और उसके अनुरूप आचरण करें। इस गलत फहमी में न रहें कि सभी कुछ इच्छा के अनुरूप होगा। घर–परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। अच्छी नौकरी के प्रस्ताव मिलेंगे।

वृश्चिक

महिने का प्रारंभ सफलता दिलायेगा। नाते–रिश्तेदारों से विवाद से बचे और सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाए रखें। जो लोग कला के क्षेत्र में हैं उन्हें ख्याति प्राप्त होगी, व्यापार में सावधानी बरतें, महिलाएं स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें।

इस माह के पर्व/त्योहार

1 मई	वैशाख कृष्णा अष्टमी	श्रम दिवस
4 मई	वैशाख कृष्णा एकादशी	श्री वल्लभाचार्य जयंती
5 मई	वैशाख कृष्णा द्वादशी	श्री सेन जयंती
7 मई	वैशाख कृष्णा चर्तुदशी	टैगोर जयंती
10 मई	वैशाख कृष्णा तृतीया	आखातीज / परशुराम जयंती
12 मई	वैशाख शुक्ल पंचमी	सूरदास जयंती / विश्व नर्स दिवस
13 मई	वैशाख शुक्ल षष्ठी	श्री रामानुजाचार्य जयंती
16 मई	वैशाख शुक्ल अष्टमी	जानकी जयंती
21 मई	वैशाख शुक्ल त्रयोदशी	राजीव गांधी पुण्यतिथी
23 मई	वैशाख शुक्ल पूर्णिमा	बुद्ध जयंती
25 मई	ज्येष्ठ कृष्णा द्वितीया	देवर्षि नारद जयंती
28 मई	ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी	वीर सावरकर जयंती

धनु

भावनाओं में न बहें और कोई भी निर्णय सोच–विचार कर ही लें। आपके पास जो भी जिम्मेदारी है। उसे मनोयोग पूर्वक निभाएं। मन बाहरी गतिविधियों में रहने से परिवार को निराशा होगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

मकर

सफलता से मनोबल बढ़ेगा, दूसरों के निजी जीवन में दखल न दें। जीवन के मनचाहें लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करें। अगर वाणी पर नियंत्रण रखेंगे तो काम सहज में ही बनते जायेंगे। जीवन साथी के स्वास्थ्य का पूर्ण ख्याल रखें। नये कार्यों के प्रस्ताव मिलेंगे।

कुम्भ

सही विचार एवं सही दिशा में प्रयासों से कठिन कार्यों में सफलता मिलेगी। अपने मान–सम्मान पर ध्यान दे, व्यवसायिक दृष्टिकोण से काई निर्णय लेंगे तो आत्मविश्वास बढ़ेगा। सम्पत्ति के बारे में कोई ठोस निर्णय ले सकते हैं। स्वास्थ्य खराब रह सकता है।

मीन

माह के आरंभ में धैर्य बनाए रखें एवं विवादों से दूर रहें। माह के अन्त में धन लाभ के योग हैं, रोगों की उपेक्षा न करें, पारिवारिक मतभेद समाप्त होने की सम्भावना है, एवं व्यापारिक दृष्टि से भी समय उत्तम है। संतान पक्ष से चिंता रहेगी, श्रेष्ठी जनों के परामर्श में रहें।

प्रत्यूष समाचार

पत्रकारिता पेशा नहीं, मिशन

उदयपुर। सिर्फ समस्याओं को उजागर करने से ही पत्रकार का दायित्व पूरा नहीं हो जाता, उन्हें समाधान के विकल्प भी बताने चाहिए। यही सृजनात्मक पत्रकारिता है। यह बात पिछले दिनों प्रत्यूष के सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी ने जार द्वारा आयोजित भारतीय नववर्ष स्नेह मिलन समारोह में कही। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता पेशा नहीं मिशन है। महाकालेश्वर सभागार में आयोजित कार्यक्रम में वरिष्ठ अधिवक्ता चन्द्रशेखर दाधीच, प्रदेश अध्यक्ष सुभाष शर्मा, नरेश शर्मा फतहनगर, प्रदेश महासचिव भागसिंह, इकाई अध्यक्ष राकेश शर्मा 'राजदीप', प्रदेश सचिव राजेश वर्मा, प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष कौशल मूंदड़ा, उपाध्यक्ष नानालाल आचार्य, भगवान प्रसाद गौड़ तथा जयपुर से आए नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट्स (इंडिया) एनयूजेआई के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य संजय सैनी ने कोरोनाकाल में दिवंगत हुए पत्रकारों के परिवारों को सहायता दिलाने में संगठन की भूमिका की जानकारी देते हुए कहा कि संगठन को पत्रकारों की सुरक्षा सहित परिवारों की चिंता करना भी जरूरी है। हरीश नवलखा ने बताया कि इस अवसर पर नारायण वडेरा (कोटड़ा), लीलेश सुयल (पलाना), नवरतन खोखावत व बाबूलाल ओड़ को सम्मानित करने के साथ ही जार सदस्यों को जैकेट्स प्रदान किए गए।

डॉ. बीएल कुमार सांई तिरूपति विवि के प्रेसिडेंट

उदयपुर। डॉ. बीएल कुमार ने सांई तिरूपति विश्वविद्यालय में प्रेसिडेंट पद ग्रहण किया। डॉ. कुमार विगत कई वर्षों से इसी विवि मेडिकल कॉलेज में ऑर्थोपेडिक विभाग में प्रोफेसर के पद पर आसीन हैं। उनके पद ग्रहण के दौरान विवि के चेयरपर्सन आशीष अग्रवाल, शीतल अग्रवाल, डॉ. सुरेश गोयल, रजिस्ट्रार डॉ. देवेन्द्र जैन एवं अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि डॉ. कुमार मार्च 2015 से विवि से जुड़े हुए हैं। प्रिंसिपल एंड कंट्रोलर भी रहे। पूर्व में डॉ. कुमार ने 20 वर्ष तक आरएनटी मेडिकल के ऑर्थोपेडिक विभाग में सेवाएं दी।

एकमे फिनट्रेड इंडिया में महिला कार्यकर्ता सम्मानित

उदयपुर। शहर के सवीना सर्कल स्थित एकमे फिनट्रेड इंडिया लिमिटेड ने महिला दिवस पर महिला कार्यकर्ताओं का सम्मान किया। डायरेक्टर दीपेश जैन एवं कृतिका जैन ने सभी को उपहार प्रदान किए। इस अवसर पर कम्पनी के राजेन्द्र चित्तौड़ा, सुरेश कुमार गुप्ता, रजनी गहलोत, यशपाल जैन एवं मनमोहन बाहेड़ सहित कई सदस्यगण मौजूद थे।

डॉ. सारंगदेवोत व डॉ. छतलानी की पुस्तक का विमोचन

उदयपुर। बौद्धिक सम्पदा अधिकारों (आईपीआर) की जटिलताओं को उजागर करने और जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत तथा डॉ. चन्द्रेश कुमार छतलानी द्वारा लिखित अनलॉकिंग इंटेक्चुअल प्रोपर्टी राइट्स ए जर्नी ऑफ जनरल अवेयरनेस शीर्षक से पुस्तक का विमोचन गोविंद गुरु विवि गोधरा गुजरात के कुलपति प्रो. प्रतापसिंह चौहान, दिल्ली विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. योगानंद शास्त्री व डॉ. जगपालसिंह ने किया। कुलपति सारंगदेवोत ने बताया कि यह पुस्तक आईपीआर के विभिन्न पहलूओं की व्यापक जानकारी प्रदान करती है, जो न केवल कानूनी पेशेवरों के लिए बल्कि बौद्धिक सम्पदा की बारीकियों को समझने में रूचि रखने वाले पाठकों के लिए भी उपयोगी है।

डॉ. सिंह डेंटल एसोसिएशन उदयपुर ब्रांच अध्यक्ष

उदयपुर। इंडियन डेंटल एसोसिएशन उदयपुर ब्रांच के अध्यक्ष पद पर डॉ. नरेन्द्रसिंह ने पद संभाला। डॉ. सिंह पिछले साल एसोसिएशन की बैठक में प्रेसिडेंट इलेक्ट के पद के लिए निर्वाचित किए गए थे। डॉ. नरेन्द्रसिंह वर्तमान में आरएनटी मेडिकल कॉलेज दंत चिकित्सा विभाग के विभागाध्यक्ष हैं।

आरके गोलछा क्रिकेट में केटी लायंस विजेता

उदयपुर। गोलछा एसोसिएटेड की स्थानीय इकाई की ओर से 15वीं स्व. राजेन्द्र कुमार गोलछा खेलकूद स्पर्द्धा में केटी लायंस गुजरात की टीम विजेता बनी। मैन ऑफ द मैच पार्थ माधवी व मैन ऑफ द सीरीज मीतेश जोशी को घोषित किया। टेबल टेनिस एकल में यश सेन प्रथम, डबल्स में आरिफ कुरैशी, मुकेश अलावत की जोड़ी विजेता बनी। कैरम एकल पुरुष में पुष्पेन्द्रसिंह, बैडमिंटन महिला एकल में हिताक्षी डोडेजा प्रथम रही। समापन समारोह में मुख्य अतिथि गोलछा एसोसिएटेड समूह के अध्यक्ष विक्रम गोलछा, प्रेसिडेंट अशोक छाजेड़, ममता जैन, फाल्गुन शाह तथा कुशाल शाह थे।

परिचर्चात्मक सेमिनार

उदयपुर। उदयपुर चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री की ओर से चैम्बर भवन में एमएसएमई उद्यमियों की समस्याओं पर परिचर्चात्मक सेमिनार हुई। मानद महासचिव मनीष गलुण्डिया ने बताया कि कार्यक्रम में चार्टर्ड एकाउंटेंट राकेश लोढ़ा विषय विशेषज्ञ रहे। वरिष्ठ उपाध्यक्षा डॉ. अंशु कोठारी ने स्वागत किया। फाइनेंस एण्ड टैक्सेशन सबकमेटी के को चेयरमैन पवन तलेसरा ने लघु एवं माइक्रो उपक्रमों की बिल भुगतान एवं कराधान से संबंधित समस्याएं बताई। विषय विशेषज्ञ ने एमएसएमई से संबंधित आयकर अधिनियम की धारा 43 बी (एच) के विभिन्न प्रावधानों को विस्तार से समझाया। कार्यक्रम में पूर्वाध्यक्ष एम.एल. लूणावत, हेमंत जैन, मुकेश मोदी, अरविंद मेहता, प्रकाशचन्द्र बोलिया, राजेश खमेसरा, महावीर चपलोत आदि ने भी भाग लिया।

रमेश चौधरी को सर्वोच्च रोटरी पुरस्कार

उदयपुर। रोटरी प्रांत 3056 के प्रांतपाल डॉ. निर्मल कुणावत की अनुशंसा पर रोटरी अंतरराष्ट्रीय ने उदयपुर के पूर्व प्रांतपाल रमेश चौधरी को स्वयं से ऊपर सेवा पुरस्कार दिया। डॉ. कुणावत ने बताया कि स्वयं से ऊपर सेवा करना लंबे समय से रोटेरियन की पहचान रही है। रोटरी ने उन सदस्यों को पहचानने के लिए स्व-पुरस्कार से ऊपर की सेवा बनाई, जो हमारे प्राथमिक आदर्श वाक्य को पूरी तरह से अपनाते हैं।

सिंघवी अध्यक्ष, जैन मंत्री

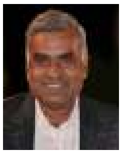

उदयपुर। आदर्शनगर जैन मित्र मंडल गायरियावास के चुनाव में प्रकाश सिंघवी अध्यक्ष, एडवोकेट जितेन्द्र जैन मंत्री निर्विरोध चुने गए। समारोह अध्यक्ष खूबचंद सिंघवी, मुख्य अतिथि पूर्व पार्षद राकेश पोरवाल एवं विशिष्ट अतिथि शांतिलाल कोठारी, पंकज सिंयाल, प्रकाश धन्नावत, गजेन्द्र ओरडिया थे। चुनाव अधिकारी द्वारा नवगठित कार्यकारिणी की घोषणा की गई। संरक्षक मोहन सेठ, प्रकाश धन्नावत, उपाध्यक्ष भानु कुमार वागड़िया, संगठन मंत्री हितेष गांधी, कोषाध्यक्ष जयेश वागड़िया को मनोनीत किया गया।

स्विमिंग पूल के नए सत्र का शुभारंभ

उदयपुर। महाराणा प्रताप खेलगांव स्थित स्विमिंग पूल के नए सत्र का शुभारंभ गत दिनों हुआ। खेल अधिकारी ललितसिंह झाला ने बताया कि मुख्य अतिथि शहर विधायक तारांचद जैन, ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, जिला अध्यक्ष अधिकारी गीतेश मालवीया, राजस्थान तैराकी संघ के सचिव विनोद आदि थे। इस अवसर पर श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले तैराकों युग चेलानी, गौरवी सिंघवी, रक्षित पालीवाल, निखिल जांगिड़, विधि एवं विधान सनाढ्य, हर्ष दिव्य, राघव खण्डेलवाल, सौम्या शर्मा और कुशाग्र पुरोहित को सम्मानित किया गया।

डॉ. अरविंदर का टेड एक्स में व्याख्यान

उदयपुर। अर्थ ग्रुप के सीईओ डॉ. अरविंदर सिंह एक बार फिर अंतरराष्ट्रीय टेडेक्स स्पीकर बने। टेड एक्स पर दोबारा आमंत्रित होने वाले वे राजस्थान के प्रथम डाक्टर हैं। उन्होंने बताया कि किताबी ज्ञान के अलावा जीवन में लाइफ स्किल्स का बहुत महत्व है। कम्युनिकेशन, नेगोशिएशन, प्रेजेंटेशन स्किल्स, पब्लिक स्पीकिंग ये सारी विधाएं जीवन में सफलता के नए आयाम छूने के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। अकेदमिक शिक्षा मजबूत नींव का तो काम करती है, लेकिन वह पर्याप्त नहीं, पढ़ाई के साथ-साथ स्किल्स आवश्यक है। टेड टॉक एक बड़ा अमेरिकन ग्रुप है जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विश्वस्तरीय स्पीकर्स को आमंत्रित करता है और उनके विचारों और उनकी जीवन यात्रा को सार्वजनिक कर प्रेरणा प्रदान करता है। पिछले दिनों टेड टॉक जयपुर में आयोजित हुई थी। सिंह ने गत वर्ष भी इंस्पायरिंग लाइफ स्टोरीज सेक्शन में टेड टॉक दिया था।

शिविर में 281 यूनिट रक्तदान

उदयपुर। आयड़ स्थित जैन तीर्थ पर डॉ. अनुष्का ग्रुप द्वारा आयोजित विशाल रक्तदान शिविर में 281 यूनिट रक्तदन हुआ। इसमें नारी शक्ति ने सौ से अधिक यूनिट रक्तदान कर उदयपुर में एक नया कीर्तिमान रचा। उद्घाटन अतिरिक्त जिला न्यायाधीश कुलदीप शर्मा एवं शहर विधायक ताराचंद जैन ने किया। संस्थान सचिव राजीव सुराणा व डॉ. रंजना सुराणा ने भी रक्तदान किया। इस मौके पर निशुल्क दंत उपचार एवं परामर्श डॉ. संदीप जैन (पेसिफिक डेंटल हॉस्पिटल) के साथ-साथ मधुमेह बीपी की जांच जेके फोर्टिस द्वारा करवाई गई। संस्थान के संस्थापक डॉ. एस.एस. सुराणा ने रक्तदान करने की अपील की। संस्थान की अध्यक्षा कमला सुराणा ने बताया कि रक्तदान आजादी के अमृत महोत्सव के जशन समारोह जैसा है।

जिला समन्वयक बने राकेश

उदयपुर। भारत विकास परिषद के प्रांतीय अध्यक्ष गिरीश पानेरी ने परिषद के लेकसिटी शाखा के पूर्व अध्यक्ष व वरिष्ठ मार्गदर्शक राकेश नंदावत को उदयपुर शहर का जिला समन्वयक नियुक्त किया है। इस अवसर पर लेकसिटी शाखा के संरक्षक राव नरपतसिंह आसोलिया, अध्यक्ष सुनील पामेचा, सचिव ललित कुमार चौधरी आदि ने हर्ष व्यक्त किया।

कुश्ती संघ उपाध्यक्ष का अभिनंदन

उदयपुर। उस्ताद लक्ष्मणसिंह व्यायामशाला के मांगीलाल कटारिया का राजस्थान कुश्ती संघ के उपाध्यक्ष बनने पर पहलवानों व संगठनों ने अभिनंदन किया। इस दौरान ओलिपिंक संघ एवं उदयपुर जिला कुश्ती संघ के साथ ही राजस्थान कजाक कुरेश संघ की ओर से उनका स्वागत किया गया। कटारिया ने भरोसा दिलाया कि राजस्थान में समय-समय पर कुश्ती के प्रशिक्षण शिविर लगाए जाएंगे। कुश्ती प्रशिक्षक डॉ. हरीश राजोरा ने बताया कि समारोह के मुख्य अतिथि सुधीर बक्शी रहे।

रीमाज वेबसाइट लॉंच

उदयपुर। अहमदाबाद में आरएमबी यानि रोटरी मिन्स बिजनेस के आयोजित समारोह में आरएमबी उदयपुर क्रॉस चैप्टर मीटिंग में नाम से रीमाज की आधिकारिक वेबसाइट लॉंच की गई। रीमाज के मुकेश गुरानी ने बताया कि उदयपुर के प्रीमियम फैब्रिक्स और फैशन ब्रांड की आधिकारिक वेबसाइट को भव्य तरीके से लॉंच किया गया। समारोह में उदयपुर, अहमदाबाद, बड़ौदा और जामनगर से 150 से अधिक व्यापारी उपस्थित थे। वेबसाइट को आरएमबी अहमदाबाद के अध्यक्ष शैलेन्द्र पुरोहित ने लॉंच किया।

शकील प्रदेश कजाक कुरेश संघ के महासचिव

उदयपुर। राजस्थान कजाक कुरेश संघ की वार्षिक बैठक में पूर्व जिला खेल अधिकारी शकील हुसैन को संघ का महासचिव बनाया गया है। डॉ. हरीश राजोरा ने बताया कि लक्ष्मणसिंह व्यायाम शाला में प्रदेश अध्यक्ष के.के. शर्मा की अध्यक्षता में हुई बैठक में रिक्त हुए पद पर नए महासचिव के लिए शकील हुसैन का प्रस्ताव को सर्व सहमति से पास किया गया।

दिलीपसिंह खेल प्रकोष्ठ संयोजक नियुक्त

उदयपुर। भाजपा देहात द्वारा वरिष्ठ तैराकी प्रशिक्षक दिलीपसिंह चौहान को खेल प्रकोष्ठ का संयोजक नियुक्त किया गया है। देहात जिलाध्यक्ष चन्द्रगुप्त सिंह चौहान ने बताया कि दिलीपसिंह के मार्गदर्शन में उदयपुर की तैराकी को पिछले चार दशकों से विश्व में पहचान दिलाई है। तैराकों ने तीन हजार से अधिक राज्य स्तरीय पदक जीते। 200 से अधिक तैराकों ने राष्ट्र स्तर पर प्रतिनिधित्व किया।

शर्मा फिर बने प्रदेश अध्यक्ष

उदयपुर। जयपुर में संपन्न विप्र सेना की राजस्थान प्रदेश पदाधिकारी बैठक में राष्ट्रीय प्रमुख सुनील तिवाड़ी व राष्ट्रीय अध्यक्ष सर्वेश जोशी ने आगामी कार्यक्रमों पर चर्चा करते हुए विप्र सेना का विजन 2027 का रोड मैप प्रस्तुत किया। इसके बाद विप्र सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष जोशी ने राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष पद पर एक बार पुन: दिनेश शर्मा की घोषणा की।

डॉ. आहूजा कुलपति नियुक्त

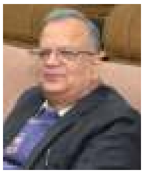

उदयपुर। असम के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने उदयपुर निवासी डॉ. बीएल आहूजा को बोडोलैंड विश्वविद्यालय कोकराझार का कुलपति नियुक्त किया है। वे पांच वर्ष की अवधि तक पद पर रहेंगे। आहूजा ने एमएलएसयू में 14 वर्षों तक भौतिकी के प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। वे कॉम्प्टन स्पेक्ट्रोमीटर विकसित करने वाले पहले भारतीय वैज्ञानिक रहे हैं। भारत सरकार की कई महत्वपूर्ण राष्ट्रीय समितियों के सदस्य भी रह चुके हैं।

ओड़ जिलाध्यक्ष मनोनीत

उदयपुर। भारतीय जनता पार्टी ओबीसी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष चंपालाल गेदर ने शहर जिलाध्यक्ष रवीन्द्र श्रीमाली की अनुशंसा पर उदयपुर के बाबूलाल ओड़ को मोर्चा का उदयपुर शहर जिला अध्यक्ष मनोनीत किया है।

डॉ. सिम्मी सिंह सम्मानित

उदयपुर। गुरु नानक कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय में सहायक आचार्य डॉ. सिम्मी सिंह चौहान को हिंदी साहित्य के क्षेत्र में योगदान तथा महारानी पद्मिनी पर लिखे गए खंडकाव्य 'सतवंती पद्मिनी' के संदर्भ में जौहर स्मृति संस्थान चित्तौड़गढ़ में आयोजित जौहर श्रद्धांजलि समारोह की मुख्य अतिथि उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी, विधायक श्रीचंद कृपलानी एवं चंद्रभान सिंह आक्या द्वारा स्मृति चिह्न एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

वन्यजीव प्रेमी चौहान को डॉक्टरेट

उदयपुर। पर्यावरण एवं वन्यजीव रक्षक वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर चमनसिंह चौहान को पशु चिकित्सालय के डिप्टी डायरेक्टर डॉ. शरद अरोड़ा ने डॉक्टरेट की उपाधि से नवाजा। उन्हें मोर संरक्षण में योगदान पर यह डिग्री दी गई।

असनानी अध्यक्ष निर्वाचित

उदयपुर। मीट मछली मुर्गा व्यापार संघ उदयपुर के 2024-27 के चुनाव में सुरेश असनानी नए अध्यक्ष चुने गए हैं। असनानी ने कार्यकारिणी में संरक्षक सुखलाल चौहान, जगन्नाथ निमावत, सलाहकार, किशन चौहान उपाध्यक्ष, रामलाल चौहान सलाम, महासचिव शोभालाल चौहान, सचिव हिम्मत, धर्मेन्द्र, कोषाध्यक्ष विक्रमसिंह चौहान कैलाश सुयल संगठन मंत्री कन्हैयालाल, लोकेश चौहान को नियुक्त किया गया।

सनाढ्य अध्यक्ष, चूंडावत सचिव

उदयपुर। शिवोहम योग आयुर्वेद एवं यज्ञ संस्थान की नई कार्यकारिणी गठित की गई। संस्थान सचिव प्रीतमसिंह चूंडावत ने बताया कि संस्थान के अध्यक्ष के रूप में योगाचार्य डॉ. नरेन्द्र कुमार सनाढ्य और उपाध्यक्ष गणपतसिंह को सर्वसम्मत से मनोनीत किया गया।

डॉ. महेश सम्मानित

उदयपुर। तैराकी प्रशिक्षक डॉ. महेश पालीवाल को पीएचडी उपाधि पर प्रशिक्षकों द्वारा सम्मानित किया गया है। जिला खेल अधिकारी अजीतकुमार जैन व प्रशिक्षक डॉ. अक्षय शुक्ला भी मौजूद थे।

गोपेन्द्र इंडिया टुडे कॉफी टेबल में

उदयपुर, राजस्थान सूचना केंद्र नई दिल्ली के पूर्व अतिरिक्त निदेशक गोपेन्द्र नाथ भट्ट को इंडिया टुडे की कॉफी टेबल में स्थान मिला है। दिल्ली एन सी आर के राजस्थानी दिग्गज संघर्ष से सफलता तक शीर्षक इस कॉफी टेबल पुस्तक में प्रदेश की 28 हस्तियों के जीवन वृत्त प्रकाशित किए गए हैं।

स्नेह मिलन व शपथ ग्रहण

उदयपुर, उदयपुर ऑटो पार्ट्स डीलर्स एसोसिएशन का होली स्नेह मिलन एवं शपथ ग्रहण समारोह मल्हार रिसोर्ट में सम्पन्न हुआ। अध्यक्ष नरेन्द्र जैन ने डायरेक्ट्री के प्रकाशन की घोषणा की विशिष्ट अतिथि बसंत जैन का सम्मान किया गया। सचिव विरेन्द्र बाफना ने बताया कि समारोह में सभी व्यापारियों ने सपरिवार उत्साह से भाग लिया। विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया।

गौरव रत्न अलंकरण से सम्मान

उदयपुर, सर्वऋतु विलास विकास समिति की ओर से प्रथम बार कॉलोनी में गौरव रत्न अलंकरण से तीन वरिष्ठ सदस्यों का होली मिलन समारोह में सम्मान किया गया। इसमें जानकी लाल मूंदडा, भंवर लाल कोठारी व जानकी लाल मूंदड़ा हैं। फतह लाल जैन के सम्मान नहीं लेने के नियम से कॉलोनी सदस्य जैन के निवास पर पहुंचे व उनके पुत्र राकेश को सम्मान सौंपा। सिंघवी ने बताया कि जैन ने गुजरात आइस्क्रीम का 55 वर्ष पूर्व व्यवसाय शुरू किया, जिसकी अपनी एक अलग ही पहचान है। इस अवसर पर श्रीपाल धर्मावत, डॉ. सम्पत कोठारी, अशोक कोठारी, दिनेश काबरा, अक्षय जैन, कमल गदिया आदि मौजूद थे।

छतलानी का चौथा विश्व रिकॉर्ड

उदयपुर, सहित्याकार डॉ. चंद्रेश छतलानी द्वारा विभिन्न अंतरराष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तरीय संगठनों यथा माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, सिस्को, विश्व स्वास्थ्य संगठन आदि के विविध अकादमिक कार्यक्रमों के ऑनलाइन माध्यम से कोविड लॉकडाउन के समय एक हजार से अधिक प्रमाणपत्र अर्जित करने के रिकॉर्ड को श्रीलंका के अंतरराष्ट्रीय संगठन वर्ल्ड बुक रिकॉर्ड ने भी स्वीकृत किया है। इससे पूर्व डॉ. छतलानी ने एक व्यक्ति द्वारा लिखित अधिकतम अंग्रेजी लघुकथाओं की पुस्तक के रिकॉर्ड को भी अपने नाम किया हुआ है। छतलानी ने इस रिकॉर्ड को अपने स्वर्गीय पिता को समर्पित करते हुए कहा कि उनकी बताई राह पर चल कर ही यह कुछ हासिल किया है।

जोशी जीजीटीयू में राज्यपाल के प्रतिनिधि

उदयपुर, राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने हिंदुस्तान जिंक के पूर्व सीईओ अखिलेश जोशी को गोविंद गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय (जीजीटीयू) बांसवाड़ा के सलाहकार मंडल में अपना प्रतिनिधि मनोनीत किया है। जोशी जीजीटीयू की प्रशासनिक-शैक्षणिक व्यवस्था को और मजबूत करने में सहयोग करेंगे। वे अभी हिंदुस्तान जिंक, आरएसएमएम सहित कई प्रतिष्ठित कंपनियों में स्वतंत्र निदेशक हैं।

पाठक पीठ

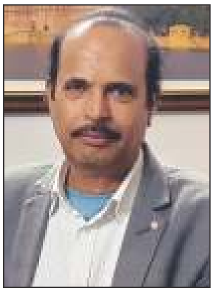

'प्रत्यूष' के अपेल-24 के अंक में वरिष्ठ पत्रकार-लेखक वेदव्यास का आलेख 'सामाजिक न्याय के आधार, अम्बेडकर और गांधी' विचारोत्तेजक था। अम्बेडकर ने जहां मनुष्य की पीड़ा को समझा था, वहीं महात्मा गांधी ने समाज में सत्य और अहिंसा की प्रतिष्ठा को आवश्यक बताया था। सत्य सर्वोपरि है। सत्य, अहिंसा और सामाजिक न्याय ही हमारे संविधान की आत्मा है। जिसका रक्षण जरूरी है।

गिरजा शंकर शर्मा,
सीएमडी, राज. बाल कल्याण समिति

विजय विद्रोही का आलेख 'चुनावी बांड पर रोक ही पर्याप्त नहीं, बहुत कुछ शेष' सामयिक संवाद है। चुनाव सुधारों पर वर्षो से बात हो रही है, लेकिन कोई भी राजनैतिक दल और सरकार उस दिशा में गंभीर नहीं है। कई मुद्दे हैं, जिन पर फैसला लिए बिना न तो जन प्रतिनिधि को जवाबदेह बनाया जा सकता है और न ही नामांकन के समय उसके द्वारा दी गई सूचना को विश्वस्त माना जा सकता है।

अर्जुन जैन,
उद्योगपति

केन्द्र सरकार ने देश भर में नागरिकता (सं) अधिनियम (सीएए) तथा उत्तराखंड सरकार ने राज्य में समान नागरिकता कानून लागू कर बरसों से बहुप्रतिक्षित कार्य को अंजाम दिया है। जो लोग इन्हें लेकर तरह-तरह की आशंकाएं व्यक्त कर रहे हैं, वे निर्मूल हैं, सच तो ये है कि वे लोग पड़ौसी राष्ट्रों में धर्म के आधार पर अल्प संख्यकों के साथ हो रहे अत्याचारों पर मौन थे। इस संबंध में अप्रेल अंक का सम्पादकीय खरी बात कहता है।

सचिन अग्रवाल,
उद्योगपति

देश में आम चुनाव हो रहे हैं, अगले माह परिणाम भी आ जाएगा। ये चुनाव लोकतंत्र की मज़बूती की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। मतदाताओं को राष्ट्र के व्यापक हित चिन्तन और मंथन कर के अपने मताधिकार का उपयोग करना होगा। मतदान से चूकना नहीं है। यह चुनाव किसी व्यक्ति अथवा दल की हार-जीत का ही नहीं है, बल्कि लोकतंत्र की जीत का भी है।

डॉ. महावीरसिंह परिहार,
डायरेक्टर,
श्रीनाथ हॉस्पिटल

संवेदना/श्रद्धांजलि

उदयपुर। श्री पवन जी बापना सुपुत्र स्व. श्री चंदनमल जी बापना का 20 मार्च को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोक सन्तप्त पत्नी श्रीमती उमा देवी, पुत्र अभिषेक व रोनक बापना, तथा भाई-भतीजों का सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती माया कृपलानी धर्मपत्नी श्री हरीश जी कृपलानी का 19 मार्च को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र कपिल, पुत्री एकता नागवानी, पौत्र-पौत्री, व भाई-भतीजों का वृहद परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। जैनम ज्वेलर्स के प्रोपराइटर समाजसेवी श्री अनिल जी पचौरी का 21 मार्च को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोक विह्वल धर्मपत्नी ममता पचौरी, पुत्र अंकित व चिराग, पौत्र-पौत्री एवं भाई-भतीजों का वृहद सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री ललित जी बी. मेहता का 16 मार्च को असामयिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोक सन्तप्त पुत्र लोकरंजन, राजन, पुत्री नीमा देवी, सुमन देवी, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व भाई-भतीजों का सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री महेन्द्र जी दुर्गावत का 5 अप्रेल को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी अरूणा दुर्गावत, पुत्र ख्यातिन्द्र, आयुष, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व भाई-भतीजों का वृहद व समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री संभव (नव) सामर का अल्पायु में 11 अप्रेल को निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पिता श्री मनीष सामर, दादा श्री सुरेन्द्र सिंह, भाई कुणाल, चयन, बहिन पार्थवी एवं चाचा-चाची, ताऊ-ताई बहिन सोनाक्षी जैन व साक्षी सोजतिया का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती लक्ष्मी बाई धर्मपत्नी श्री मोहन लाल जी जोशी निवासी ब्राम्हणों का गुड़ा का 25 मार्च को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकसन्तप्त पति, प्रभुलाल जी-लहरी बाई (सास-ससुर), नवीन जोशी पुत्र, पुत्रियां कंचन व निर्मला, पौत्र, दोहित्र व दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री कन्हैयालाल जी त्रिवेदी (ठेकेदार सा.) का 13 मार्च को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी सरस्वती देवी, पुत्र हरीश, हेमन्त, महेश (पार्षद) नरेश, पुत्री हेमलता, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व भाई-भतीजों का वृहद परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती चंचल देवी जी दक धर्मपत्नी श्री कन्हैयालाल जी दक का 2 अप्रेल को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे पुत्री-दामाद रेखा-नरेश जी वया, रेणु-प्रकाश जी कोठारी, रितु-सुधीर जी कच्छारा, रीना-चंद्रेश जी रांका, दोहित्र-दोहित्रियों, जेठ-जेठानी, देवर-देवरानी एवं भाई-भतीजों का समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। समाज-रत्न, उद्योगपति श्री झमक लाल जी टाया (94) का 18 मार्च को स्वर्गारोहण हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्री-दामाद सरला-विजयजी लोलावत, अर्चना नेमीचंद जी पटवारी, डॉ. ज्योति-प्रकाश जी अखावत, नीरा-रजनीकांत जी वरदावत, दोहित्र-दोहित्रियों, भाई-भतीजों का वृहद व सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। दी उदयपुर अरबन को-ऑपरेटिव बैंक के संस्थापक-अध्यक्ष एवं हिंदुस्तान जिंक व वंडर सीमेंट के पूर्व निदेशक हाजी इब्राहिम अली इंजीनियर का 8 अप्रेल को इन्तकाल हो गया। वे अपने पीछे गमज़दा धर्मपत्नी जुबेदा अली, पुत्रियां सलमा शाह, जुलेखा कत्थावाला, मीना फैजी, बेनजीर अली व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। उन्होंने राजस्थान में सीमेंट उद्योग के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

उदयपुर। राजस्थान बार काउंसिल, जोधपुर एवं बार एसोसिएशन, उदयपुर के पूर्व अध्यक्ष एडवोकेट फतहसिंह मेहता का 3 अप्रेल को स्वर्गवास हो गया। वे 90 वर्ष के थे। वे अपने पीछे शोक सन्तप्त पुत्र महेन्द्र, अनुराग व राहुल, पुत्री मधुलिका बाबेल व मनीषा लुणावत, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व भाई-भतीजों का वृहद परिवार छोड़ गए हैं। स्व. मेहता बड़ी सादड़ी (चित्तौडगढ़) नगर पालिका के चेयरमैन भी रहे। उनके निधन पर विभिन्न सामाजिक व राजनैतिक संगठनों ने दु:ख व्यक्त किया है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित
आकाश वागरेचा
मो :- 94141-69241
EVEREST GROUP OF COMPANIES
SINCE 1963
एवरेस्ट ग्रुप ऑफ कम्पनीज
शुभलक्ष्मी बिल्डकॉन प्रा. लि.
सावा सर्जिकल प्रा. लि.
एवरेस्ट नेचुरो हर्ब प्रा. लि.
एवरेस्ट इंटरनेशनल होटल एंड रेस्टोरेंट
एवरेस्ट आशियाना बिजनेस प्रा. लि.
169-ओ रोड, भूपालपुरा, उदयपुर (राज.)

GOLCHA ASSOCIATED

एन्वायरोग्रीन कंसलटेंट (इण्डिया) प्रा.लि.

EGCIPL

(Accredited with QCI-NABET & QCI-NABL)

हमारी सेवाएं

- जियोलॉजी एवं हाइड्रो जियोलॉजिकल (भू जल विज्ञान)
- हॉर्टिकल्चर (वानिकी) • खनन एवं सर्वे,
- खनिजों का रासायनिक विश्लेषण,
- खदानों में जोखिम आकलन (Risk Assessment) संबंधित सेवाएं

1-बी, माछला मगरा, पटेल सर्किल के पास, गोलछा पॉलिक्लिनिक,
उदयपुर-313002 मो. 9352239829, 8003590552
www.egcipl.com email : info@egcipl.com

एसोसिएटेड डेल्टावेज लोजिस्टिक्स प्रा.लि.

हमारी सेवाएं

• रोड फ्रेट • पाउडर हेतु बलकर • वेयरहाउसिंग
• बल्क मटेरियल हैण्डलिंग कॉन्ट्रेक्ट

24-आकाशवाणी मार्ग, मादड़ी, उदयपुर
मो. 9352239832, 9353339830

Lotus
PRE-ENGINEERED BUILDING
BUILDING A GLOBAL LEGACY
LOTUS HI-TECH INDUSTRIES
India's leading manufacturer of premium
Pre-engineered Building & turnkey solutions provider
OUR PRODUCTS & SERVICES
Pre-Engineered Building
EOT Crane Systems
PEB Accessories
Modular Prefab Homes
Turnkey Project Solutions
Civil Construction
Industrial Architecture
ACHIVEMENTS
• FORTI Business Excellence Award 2023
• Best Young Entrepreneur Award 2023
• Indian Icon Award 2022
• Pride of Rajasthan Award 2022
• Dr. APJ Abdul Kalam National Award 2020
• Times of India Entrepreneurs Award 2016
• Shakhsiyate The Pride of Mewar Award 2015
• North India MSME Entrepreneurs Award 2011
LOTUS HI-TECH INDUSTRIES
Office Add. - F34A, Road No. 5, M.I.A., Udaipur (Raj.) India 313003
Mo. - +91 9829048372, +91 8003299943. E-mail - lotusremson@gmail.com
Website - www.lotushitech.com, www.lotusstar.in

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 22 अंक 01, Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2024-26 Posting Date: 27th-28th of Every Month RNI No. RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur
'प्रत्यूष' पत्रिका डिलिवर्ड न होने की स्थिति में इस पते पर लौटाएं: पंकज कुमार शर्मा, 2, रक्षाबंधन, मेहतों का पाड़ा, धानमण्डी, उदयपुर (राज.) 313 001